मेनता अरा हेभेरना

मेनता अख़ना

मास्टरस ख़ददारिन एँड़ खोड़हा नू खट्टर की आरिन तंग'आ तंग'आ नू बारका मेनता मेनोस अरा मेंजख़ा चि'आगे आनोस। ध्यान उइके मेनता मेनना अरा मेंजख़ा चिआगे मोका ओरमा ख़द्दारगे चि'अके।

ख़द्दर गहि मेनता–मेंजख़ा ख़ोख़ा मास्टरस तान हूँ खद्दरती बारका मेनता मेनोस, जोक्क, मेनता एन्ने हूँ मना उंगी–

क. ई कुंडली गहि तूडु'उस ने तली ?

ख. ई पाठ ता कुंडली एका भख़ा नू तूड़का र'ईं ?

ग. विज्ञान आलारिन एन्देर लूर चि'ई ?

मेनता 1. किइय्या तूड़का मेनता गहि मेंजख़ा तूड़ा–

क. तूडुस दौकेम मास्टरस अरा दौ लूर नेकन बाचका र'अदस।

ख. विज्ञान ती नम्हैं जिन्दगी नू ऐन्दरा–ऐन्दरा बदलारा।

ग. आलार पुना–पुना खोज एका बारी नन्नर ?

घ. उज्जा अरा उज्जा चि'आ एका धाइर ता भाव तली ।

मेनता 2. ई धाइर गहि मानें तेंग्गा–

क. ननना राजी गहि कल्याण, असीस ओर्मर ती हो'आ ।

नीन हूँ उज्जा और नन्नारिन हूँ, उज्जा चि'आ।

ख. दौकेम तली संग्गे लूर ही तली समुदर,

एम्बा–एम्बा रासी खक्खा, लहर लहर ही भीतरी।

मेनता 3. दरबड़या धईरन मुंजा।

क. र'आ निंग्हैं एड़पा नू मलता .....

..... ननर की ,बने पुस्तक।

ख. ..... ख़क्ख़ा दुआ जकोरती।

नीन हूँ उज्जा ..... हूँ उज्जा चि'आ।

कत्था–बचना अरा कत्थअइन

इसन नाम सिखिर'ओत – **कुँडुख़ भखा बक्क ही मानें तूड़ता'आना।**

– मास्टरस पाठ गहि आखिरी नू चिचका कठिन बक्क आबोन ब'ओस अरा ख़ददारिन तूड़ागे अनोस। बक्क तूडुका ख़ोख़ा खददार गही मेंजका कापीन तंग'आ नू बदला'अर की जांच'आगे अनोस। मुंजा नू मास्टरस तानिम ई बक्कन तक्तानू तूड़ोस अरा गलतीन सुधुरतोओस।

मेनता 1. इसन मून्द बक्क चिच्चका र'ई – कुंडली, कुंड ,कुंडल। ई बक्क गहि किइय्या। तूड़का बकपून जुदा–जुदा बेहवार ननाा।

क. ख़ेबदा नू अत्तना ओंटे बरन सिंगार ..... बातारकी र'ई।

ख. नेर्रे एकाबारी तंम्हैं मेदन पूरा गोल कम'अर की उक्की, अदिन.....बा'अनर।

ग. एकसन अम्मू निंदकी र'ई, अदिन ब'अनर.....।

मेनता 2. जोड़ा कम'आ–

परता गहि	–	पुस्तक
मोख़ना गहि	–	चुन्दी।
हे'अना गहि	–	असमा।
पढ़ना गहि	–	धुती।

किइय्या तूड़का बकपून आबोन बच'आ –

– रविस अजम पेरंहा कुक्कोस हिकदस, तम्बस अजम बुझा बाचस पंहे आस तनिक हूँ माल बुझ्झरस।

– रविस लेबड़ा कुक्कोस हिकदस, तम्बस अनैत बुझा बाचस पंहे आस अत्तरा न इत्तरा माल मन्जास।

एँड़ो बकपून कत्था एँड़ो बरन ही तूड़की र'ईं एँड़ो ही भाव ओंटम र'ई। पंहे एँड़ो ही असर नू नन्ना र'ई। नन्ना बकपून नू बाई चखना बेहवार मंजका ती ईद बग्गे असरदार र'ई।

मेनता 3. किइय्या जोक्क बाईचख़ना चिचका र'ई। सही बाई चखनान चाजर की अदिगहि दव रूप कम'आ अरा चिच्चका बकपून ही धाइर नंजका गहि अड्डा नू तूड़र

की बकपून आबोन फिन तूड़ा।

(लूर नू पखना लगना, टेड़हो नजाइर, टेड़होखीर, दाली माल गिलीरना, पैरी मनना)

क. गणिता सवाल बुझुरना कठिन तली।

ख. चो'आ बेटा, बिज्जिया केरा। पैरी मंजाकेरा ।

ग. तंग्यो तंगदस तरा कैरारा की ईरिया अरा आनिया।

घ. बंगस गहि मुन्धवारे आस ही ऐन्दरा हूँ माल चल्लरा अरा आस जियन कजियास ती रई केरास।

ड. एंग्हैं गा लूर बुद्वि बेंड़ारकी किरकी रहचा, मलती एन्देरगे एन असन कोलोन दने।

बुझुर'आ

– हेददे ता आलसगे ब'अनर – इस। इस ही

– गेच्छता आलसगे ब'अनर – हूस। हूस ही

– अनचिन्हर आलसगे बअनर – आस। आस ही

– कुँडुख़ भखा नू पेसना कत्था तली – बच'आ, बढ़रआ, रआ, कला।

– तंग'आ डहरे एदना बक्क तली – ख़खोय, र'ओय।

मेनता 4. किइय्या तूड़का कत्था गहि बिड़दो कत्था कुँडुख़ भखा नू तूड़ा।

दौले, लुरगर, संगे, एंम्हैं, कमचस, बरचस।

मेनता 5. पाठ नू नन्ना पेसका मानें लेक्खा अरा डहरे एदना लेक्खा कत्थन चाजर की नन्ना–नन्ना खोड़हा नू तूड़ा।

जोगे–बढ़हाबअ'ना

– कोदूराम दलित गहि नन्ना कुण्डली बेददा अरा अदिन कक्षा नू, तेंग्गा।

– करम अरा खद्दी डंडी कुँडुख़ भखा गहि डंडी तली। एँड़ो गहि ओंटे–ओंटे डण्डी यादनना अरा कक्षा नू पाड़ा ती मेनत'आ।

कत्थ–टूड़

हिन्दीता एक'अम नन्ना तूडुस गहि ओंटा कुण्डिलिया बेद्दर की तूड़ा।

R7VER6

4TU2N2

पाठ 14

ऊर्जा की बचत

लकड़ी, तेल, कोयला, पेट्रोल आदि ऊर्जा के स्रोत हैं। धीरे–धीरे इनके भंडार कम हो रहे हैं। बिजली भी ऊर्जा का स्रोत है। इसकी माँग बढ़ रही है, उत्पादन उतना नहीं हो रहा। इसलिए वैज्ञानिक ऊर्जा के नए स्रोत खोज रहे हैं और उसकी बचत के उपाय बता रहे हैं।

जाड़े के दिन थे। मीनू अपने आँगन में रस्सी कूद रही थी– एक, दो, तीन, चार .. पच्चीस तक आते–आते थककर हाँफने लगी। उसकी माँ सोलर कुकर में दाल, चावल, आलू रख रही थीं। इतने में मीनू की सहेली रजिया आई और बोली, ''मौसी, ये क्या कर रही हो ? इस बक्से में आप क्या रख रही हैं ?

मौसी कुछ जवाब देतीं इसी बीच मीनू ने हँसते हुए कहा, ''अरी मूर्ख, यह बक्सा नहीं है, सोलर कुकर है।''

''सोलर कुकर! मौसी यह क्या होता है ? यह किस काम आता है?'' अब मौसी बोलीं–''बेटी! इसे सोलर कुकर कहते हैं। सोलर का अर्थ है सूर्य का और कुकर का अर्थ है खाना बनाने का यंत्र। सोलर कुकर का अर्थ हुआ– वह यंत्र जिसमें सूर्य की ऊर्जा से खाना पकता है।''

''मौसी, हमें सोलर कुकर की आवश्यकता क्यों पड़ी ? खाना तो हम चूल्हे पर, स्टोव पर और गैस पर ही बनाते हैं।''

मौसी बोलीं, ''यह तो तू जानती है हमारे देश की जनसंख्या दिन दूनी, रात चौगुनी बढ़ती जा रही है। ऊर्जा के जो स्रोत हैं– लकड़ी, तेल, गैस आदि –वे धीरे–धीरे कम होते जा रहे हैं। इसलिए नए स्रोतों को खोजा जा रहा है। सूर्य से हमें बहुत ऊर्जा मिल सकती है। इसलिए वैज्ञानिकों ने यह नया यंत्र बनाया है– सोलर कुकर। इसमें खाना पकाया जाता है। इसमें खाना बहुत स्वादिष्ट पकता है।''

''मौसी, इसमें काले–काले डिब्बे रखे हैं, भीतर आइना लगा है। यह किसलिए?''

''हाँ, देख इसके ढक्कन में अंदर की तरफ बड़ा–सा आइना लगा है। उसके बाद यह एक पारदर्शी काँच की पट्टी है। बक्से के अंदर खाना रखने के लिए काले–काले डिब्बे हैं। बक्से के ढक्कन को खोलकर धूप की तरफ रखते हैं। सूरज की किरणें आइने से टकराकर अंदर वाले काँच पर सीधी पड़ती हैं। इसकी गर्मी से ही डिब्बों में रखा खाना पकता है।''

''मौसी, खाना तो गैस चूल्हे पर भी पक जाता है– फिर सोलर कुकर पर क्यों पकाया जाए।''

शिक्षण–संकेत : *पाठ प्रारंभ करने के पूर्व ऊर्जा पर चर्चा कीजिए। ऊर्जा के स्रोत पूछिए और बताइए। इनका महत्व भी बताइए। यह भी बताइए कि ऊर्जा के भंडार समाप्त होते जा रहे हैं। उनकी बचत करने के उपायों पर भी चर्चा करें। कक्षा को छोटे–छोटे समूहों में बाँट दें और उन्हें एक–एक अनुच्छेद पढ़ने और चर्चा करने को दें। फिर आदर्श वाचन करें और बच्चों से पढ़वाएँ। पढ़ने के साथ–साथ कठिन शब्दों का अर्थ बताते जाएँ और बच्चों से वाक्य प्रयोग कराते जाएँ।*

मौसी ने बताया, "तू ठीक कहती है। खाना तो चूल्हे पर लकड़ी जलाकर, मिट्टी के तेल से जलनेवाले स्टोव पर या गैस के चूल्हे पर भी बनता है। लेकिन इन साधनों से खाना बनाने में जितनी ऊर्जा खर्च होती है, उससे बहुत कम ऊर्जा इस सोलर कुकर में लगती है। इससे सबसे बड़ा लाभ यह है कि हमें लकड़ी जलाने या मिट्टी का तेल जलाने या गैस जलाने पर जो खर्च होता है, सोलर कुकर पर ऐसा कोई धन खर्च करना नहीं पड़ता।"

"मौसी, लकड़ी या मिट्टी के तेल को बचाने का सवाल नहीं है। कभी बिजली की कमी हो जाती है, कभी पेट्रोल की कमी हो जाती है। इनको बचाने के भी उपाय होने चाहिए।"

"तू ठीक कहती है, बेटी! वैज्ञानिक दिन–रात इनको अधिक–से–अधिक बचाने के उपाय सोच रहे हैं। तूने वायु–ऊर्जा के संबंध में सुना होगा। वायु से बिजली पैदा की जा रही है। पवन–चक्कियाँ बनाई जा रही हैं, जो हवा की ऊर्जा से चलती हैं। पहाड़ों पर पानी की धार से बिजली पैदा की जाती है और उससे आटा–चक्कियाँ चलती हैं। अपने राज्य के गाँवों में गोबर गैस से बहुत ऊर्जा पैदा की जाती है, जो तरह–तरह से हमारे काम आती है।"

"मौसी, वैज्ञानिक तो ऊर्जा के नए–नए स्रोत खोज रहे हैं। हम लोगों को भी कुछ काम करना चाहिए।"

"बेटी! तूने बहुत अच्छी बात कही। अगर हर आदमी ऐसा सोचे तो हमारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएँ। बिजली की बचत के लिए हम आसानी से यह कर सकते हैं कि जब प्रकाश या हवा की जरूरत न हो तो बिजली के बल्ब, ट्यूबलाइट, पंखे न चलाए जाएँ। बल्ब जलाने में अधिक मात्रा में बिजली खर्च होती है। उनके स्थान पर ऐसी ट्यूब लाइट या बल्ब जलाएँ जिनमें बिजली कम खर्च हो। विवाह–शादी, जन्म–दिन आदि अवसरों पर अधिक तड़क–भड़क न करें। इसी प्रकार नल से जितना पानी जरूरी हो, उतना ही लें। फालतू पानी न बहने दें। मोटर साइकिल, स्कूटर, कार का कम–से–कम उपयोग करें। हर चीज़ की बचत करना हमारी आदत बन जाए तो हमारी सारी समस्याएँ दूर हो जाएँ।"

"मौसी! मैं तो मीनू के साथ बैठकर होमवर्क करने आई थी। आपने इतनी अच्छी बातें बताई। मैं भी ये बातें अपनी सहेलियों को बताऊँगी। मीनू, अब चल, थोड़ा पर्यावरण अध्ययन पढ़ लें।"

शब्दार्थ

ऊर्जा	–	शक्ति	स्वादिष्ट	–	अच्छा स्वाद देनेवाला
यंत्र	–	मशीन	आइना	–	दर्पण

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सोलर कुकर का वर्णन करो।

प्रश्न 2 सोलर कुकर से क्या–क्या लाभ हैं ?

प्रश्न 3 पेट्रोल की बचत हम कैसे कर सकते हैं ?

प्रश्न 4 बिजली की बचत किस प्रकार की जा सकती है ?

भाषा–तत्त्व और व्याकरण

- शिक्षक बच्चों से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख लिखवाएँ।

प्रश्न 1 नीचे दिए गए शब्दों/वाक्यांशों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।
अधिक–से–अधिक, नए–नए, तरह–तरह।

प्रश्न 2 निम्नलिखित वाक्यों को अलग–अलग प्रश्नवाचक शब्दों का प्रयोग कर बदलो।
क. हम लोगों को भी कुछ काम करना चाहिए।
ख. वैज्ञानिक ऊर्जा के नए स्रोत खोज रहे हैं।
ग. ऊर्जा की बचत के लिए उपाय होने चाहिए।

प्रश्न 3 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ, जैसे–
समाज + इक – सामाजिक
धर्म + इक – ————— , परिवार + इक – ——————
साहित्य + इक – ————— , अर्थ + इक – ——————

समझो

- आवश्यक में 'ता' जोड़कर बना है 'आवश्यकता'।

प्रश्न 4 स्वच्छ, नम्र, पवित्र शब्दों में 'ता' जोड़ो और नए शब्द बनाकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन शब्दों के विलोम शब्द लिखो।
अधिक, ठीक, सीधी, उपयोग, बनाना, अर्थ ।

रचना

- पानी को बचाने के कोई दस उपाय लिखो।

योग्यता–विस्तार

- यदि तुम्हारे आसपास गोबर गैस से चलनेवाला कोई यंत्र हो तो उसके संबंध में विस्तार से जानकारी लो।
- अपने घर में या आसपास के घरों में जाकर पता करो कि लकड़ी के चूल्हे में खाना बनाने में किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है।
- शिक्षक की मदद से आसपास की चीजों से सोलर कुकर का मॉडल बनाओ।

4U3XPP

पाठ 15

चूड़ीवाला

यह सोचना बिल्कुल गलत है कि छोटे लोगों का ईमान मूल्यवान वस्तुओं पर डिग जाता है। इस कहानी में एक छोटी बालिका ने अपने पिता के चोरी करने के कारनामे को बताकर यह सिद्ध कर दिया है कि छोटे लोग भी बहुत ईमानदार होते हैं।

मैं अपनी गुड़िया से खेल रही थी कि बाहर से किसी ने लंबी हाँक लगाई, 'चूड़ियाँ ले लो, चूड़ियाँ। फिर किसी ने कहा, ''अरे नन्हीं, बाहर आकर देखो तो। तुम्हारे लिए चूड़ियाँ लाया हूँ।''

मैं भागी–भागी बाहर गई तो देखा कि चूड़ीवाला सिर पर चूड़ियों की टोकरी रखे खड़ा है। उसने मुझे देखकर कहा, ''आओ नन्हीं, कुछ चूड़ियाँ खरीद लो।''

मैं बोली, ''मुझे चूड़ियाँ खरीदनी तो थीं, मगर खरीद नहीं सकती क्योंकि माँ बाहर गई हैं। पैसे कौन देगा ?''

''कोई बात नहीं। आओ, आकर चुन तो लो। मैं पैसे किसी और दिन आकर ले जाऊँगा।''

मैं थोड़ी देर सोचती रही। चूड़ीवाले ने मुस्कराकर पूछा, ''बिटिया, तुम्हें कौन–से रंग की चूड़ियाँ सबसे ज्यादा पसंद हैं ?''

'' नारंगी,'' मैंने उत्तर दिया और चूड़ियाँ भी चुन लीं। चूड़ीवाले ने वे छह चूड़ियाँ मुझे पहना दीं। तब तक माँ भी आ गईं और उन्होंने चूड़ीवाले को पैसे दे दिए।

कुछ दिनों बाद चाचा मेरे लिए एक सुन्दर–सी, बोलनेवाली गुड़िया ले आए। उसे पाकर मैं तो पुलकित हो उठी।

मैंने माँ से कहा, ''अम्मा, मैं अपनी गुड़िया के लिए भी चूड़ियाँ खरीदूँगी।''

माँ ने कहा, ''बेटी, जरूर लेना। चूड़ीवाले को आने दो।''

एक दिन गली में ''चूड़ियाँ ले लो, आओ लड़कियो, चूड़ियाँ ले लो,'' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मैं अपनी गुड़िया को साथ लेकर, लपककर नीचे उतरी। मैंने चूड़ीवाले को बुलाया। वह चूड़ियों की टोकरी के साथ बरामदे में आकर बैठ गया।

उसने पूछा, ''अब कौन–सी चूड़ियाँ चाहिए ?''

मैंने उसे अपनी गुड़िया दिखाकर कहा, ''मेरी गुड़िया के लिए अच्छी–सी चूड़ियाँ दे दो।''

चूड़ीवाले ने हँसकर कहा, ''हाँ, हाँ! क्या यह तुम्हारी बिटिया है ?''

''हाँ!''

शिक्षण–संकेत : *बच्चों से फेरीवालों के संबंध में चर्चा करें। इनसे तुमको क्या लाभ होता है– पूछें और बताएँ। चूड़ियों के संबंध में भी चर्चा करें। पाठ का सारांश बता दें और छोटे–छोटे समूह में पाठ बाँट दें। बच्चे समूह में अनुच्छेद पढ़कर चर्चा करें। अपने–अपने समूह का सारांश कहलवाएँ। बाद में पाठ का वाचन करें और अनुकरण वाचन कराएँ। विद्यार्थियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। ड और ड़ के उच्चारण को स्पष्ट करें।*

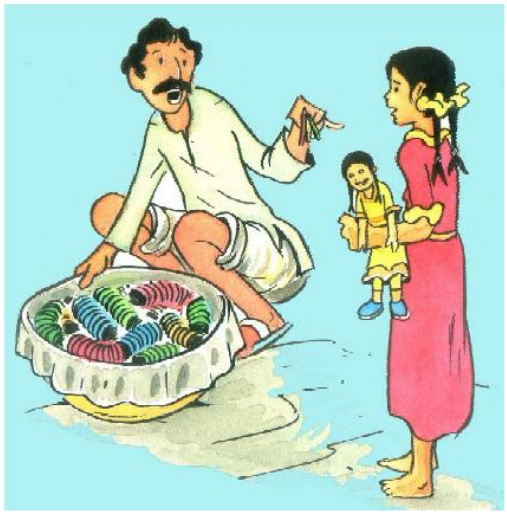

उसने मेरी गुड़िया के लिए लाल चूड़ियाँ चुनकर निकालीं। फिर मेरी गुड़िया को देखकर बोला, ''बड़ी सुन्दर है गुड़िया तुम्हारी; बहुत महँगी होगी।''

''हाँ, बहुत कीमती है।''

''मेरी बेटी को भी ऐसी गुड़िया पसंद आएगी।''

''तुम्हारी बेटी भी है क्या ?''

''हाँ, तुम्हारी ही उम्र की होगी।''

''क्या उसके पास गुड़िया नहीं है ?''

''नहीं, हम गरीब आदमी हैं। ऐसी गुड़िया कहाँ से खरीदेंगे ?''

''चिंता मत करो। मैं चाचा से कहकर एक गुड़िया और मँगवा दूँगी। चूड़ियों के कितने पैसे देने हैं ?''

''पचास पैसे।''

''जरा मेरी गुड़िया का ध्यान रखना, मैं पैसे लाती हूँ।''

मैं लपककर ऊपर माँ के पास पैसे लेने गई लेकिन जब वापस नीचे पहुँची तो चूड़ीवाला जा चुका था और मेरी गुड़िया भी गायब थी।

''मेरी गुड़िया, मेरी गुड़िया.....'' मैं रोती हुई माँ के पास पहुँची।

''माँ, चूड़ीवाला मेरी गुड़िया ले गया। मेरी नई गुड़िया।''

''चूड़ीवाला! तुमने उसे गुड़िया क्यों दी ?'' माँ ने कहा और वे भागकर चूड़ीवाले को देखने बाहर निकलीं।

मैं रो रही थी।

मेरी माँ ने मुझे चुप किया और पड़ोसियों को भी सतर्क रहने के लिए कहा।

उस रात मैं रोती–रोती सोई। अगली सुबह मैं जल्दी ही उठ खड़ी हुई और खिड़की के पास बैठ गई। तभी मैंने देखा कि एक आदमी चादर ओढ़े हमारे घर की ओर आ रहा है। उसके साथ एक छोटी लड़की भी थी। मैं उस आदमी का चेहरा नहीं देख पा रही थी।

हमारे घर के सामने आकर वह आदमी रुक गया। उस आदमी ने लड़की को एक पैकेट दिया और कुछ कहा।वह लड़की पैकेट पकड़े हुए हमारे फाटक के निकट आई। उसकी फ्राक गन्दी और फटी हुई थी।

मैं उसे फाटक के पास खड़े देख नीचे उतरी। मैंने लड़की से पूछा, ''तुम कौन हो ? क्या चाहिए ?'' वह कुछ देर देखती रही, फिर उसने पूछा ''तुम्हारी अम्मा कहाँ हैं ?''

''ऊपर हैं।''

लड़की ने सावधानी से पैकेट खोला। उसमें मेरी गुड़िया थी।

''अरे , यह तो मेरी गुड़िया है। तुम्हें कहाँ मिली ?''

वह ऐसे बोली, जैसे उसने मेरा प्रश्न सुना ही न हो। ''तुम अपनी गुड़िया ले लो। ये जो फाटक के पास खड़े हैं, मेरे पिता जी हैं। वे चूड़ियाँ बेचते हैं। जब वे मेरे लिए यह गुड़िया ले गए तो मुझे आश्चर्य हुआ कि वे इतनी कीमती गुड़िया कहाँ से लाए।'' कुछ देर रुककर उसने फिर कहना शुरू किया, ''हम गरीब हैं। ऐसी गुड़िया के बारे में मैं सपने में भी नहीं सोच सकती थी।''

मैं कुछ बोल न सकी। तभी चूड़ीवाला भी आगे आ गया। उसने चेहरे से चादर हटाई और धीमे स्वर में कहा, ''नन्हीं, अपनी गुड़िया ले लो। मैं इसे अपनी बेटी के लिए ले गया था। जब इसने सुना कि मैंने गुड़िया चोरी की है तो इसने इसे लेने से इंकार कर दिया।''

मैंने अपनी गुड़िया उठाई और गले से लगा ली और कहा –

''मुन्नी! धन्यवाद। मैं तुम्हें सदा याद रखूँगी।''

इतने में मेरी अम्मा फुर्ती से नीचे उतर आईं। जब उन्होंने पूरी कहानी सुनी तो वे बोलीं, ''चूड़ीवाले, ये पैसे लो। जाकर अपनी बेटी को गुड़िया खरीद देना।''

जैसे ही वे फाटक से बाहर निकले, मुन्नी मुड़कर मुस्कराई। मैंने हाथ हिलाया और उसने भी इसका उत्तर हाथ हिलाकर दिया।

शब्दार्थ

परिचित	–	जाना–पहचाना	सँभलकर	–	सावधानीपूर्वक
फाटक	–	बड़ा दरवाजा	सतर्क	–	सावधान
आश्चर्य	–	हैरानी, अचंभा			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 नन्हीं की गुड़िया कौन ले गया और क्यों ?

प्रश्न 2 नन्हीं की माँ ने पड़ोसियों को चूड़ीवाले से सावधान रहने के लिए क्यों कहा ?

प्रश्न 3 चूड़ीवाले की बच्ची ने नन्हीं की गुड़िया क्यों लौटा दी ?

प्रश्न 4 तुम्हारी कोई प्रिय चीज खो जाने या नष्ट हो जाने पर तुम्हें कैसा लगता है ?

प्रश्न 5 चूड़ियाँ किस–किस पदार्थ से बनती हैं ?

प्रश्न 6 चूड़ीवाला अपना मुँह ढँककर क्यों आया था ?

प्रश्न 7 नन्हीं और मुन्नी दोनों में से तुम्हें किसका चरित्र अच्छा लगा? उसके चरित्र की विशेषताएँ लिखो।

प्रश्न 8 'दुकान' शब्द में 'दार' शब्द लगाने से शब्द बना 'दुकानदार'। इसी तरह तुम भी 'दार' लगाकर पाँच शब्द बनाओ और उन्हें अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 9 जैसे 'चूड़ी बेचनेवाले को चूड़ीवाला कहते हैं, वैसे ही इन्हें क्या कहेंगे ?'

क. दूध बेचनेवाले को ख. सब्जी बेचनेवाले को।

ग. रिक्शा चलानेवाले को। घ. चाट बेचनेवाले को।

ङ. ताँगा चलानेवाले को ।

प्रश्न 10 चूड़ीवाले ने मुस्कराकर पूछा। इस वाक्य का अर्थ है – चूड़ीवाला मुस्कराया फिर उसने पूछा। अब इन वाक्यों को इसी प्रकार तोड़कर लिखो।

क. चूड़ीवाला गुड़िया लेकर चला गया ।

ख. पुलिस ने चोर से डाँटकर पूछा।

ग. मैंने उसे अपनी गुड़िया दिखाकर कहा।

प्रश्न 11 नीचे लिखे सभी शब्द स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनमें बाईं ओर के सभी शब्द आ की मात्रा (ा) से अन्त होने वाले हैं और दाईं ओर के शब्द 'ई' की मात्रा (ी) से अंत होनेवाले हैं। इनके बहुवचन बनाने के नियम समझो।

एकवचन	**बहुवचन**	**एकवचन**	**बहुवचन**
गुड़िया	गुड़ियाँ	चूड़ी	चूड़ियाँ
चुटिया	चुटियाँ	खिड़की	खिड़कियाँ
खटिया	.....	लड़की	.....
डिबिया	.....	बिजली	.....
पटिया	.....	चींटी	.....
बछिया	.....	सीटी	.....
चिड़िया	.....	सीढ़ी	.....

रचना

- किसी फेरीवाले पर आठ वाक्य लिखो।

योग्यता विस्तार

- तुम्हारे आसपास इसी तरह की घटना घटी हो या तुम्हारी जानकारी में ऐसी घटना हो तो उसे कक्षा में सुनाओ।
- ऐसी कौन – कौन सी चीजें हैं जो तुम्हारे घर के पास ही बिकने आती है।
- जब ये अपना सामान बेचने आते हैं तो बताओ कैसी आवाजें निकालते हैं।

सब्जीवाला – .....

दूधवाला – .....

कबाड़ी वाला – .....

4ULPSZ

4UVKUH

पाठ 16

राजिम मेला (सहेली को पत्र)

पत्र लिखने की आवश्यकता सभी को पड़ती है। सभी परिवारों के कुछ लोग, संबंधी, मित्र देश–विदेश में दूर–दूर तक रहते हैं। धनवान लोग उनसे दूरभाष पर बात करते रहते हैं, पर सभी लोगों के यहाँ तो दूरभाष नहीं हैं। वे पत्र–व्यवहार के द्वारा एक–दूसरे का कुशल–क्षेम पूछते हैं और आवश्यक जानकारी देते हैं। इस पाठ में एक सहेली ने एक मेला देखने के बाद इस पत्र में उसका वर्णन किया है। पत्र पढ़कर पत्र लिखने का तरीका जानो।

शंकर नगर, रायपुर
(छत्तीसगढ)
22 दिसम्बर, 2010

प्यारी सहेली श्वेता,

मैं यहाँ पर अच्छी हूँ। तुम कैसी हो? तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है। हमारे स्कूल में अभी खेल प्रतियोगिताएँ चल रही हैं। मैं भी खो–खो और लम्बी दौड़ में भाग ले रही हूँ। तुम्हारे यहाँ खेल प्रतियोगिताएँ कब हैं? अरे हाँ, एक बात मैं तुम्हें बताना चाह रही थी। कुछ दिन पहले मैं राजिम अपने मामा के यहाँ गई थी, माँ और पिता जी के साथ। पिता जी के लिए मामा का पत्र आया था कि आप लोग सत्तो को लेकर आ जाइए; यहाँ माघ का मेला लगा है। बस, हम लोग चल पड़े। मामा–मामी से मिलना और मेला देखना– एक पंथ दो काज। जिस बस में हम लोग राजिम जा रहे थे, उसमें बहुत ज्यादा भीड़ थी। थोड़ी देर तो हमें बस में सीट ही नहीं मिली; हमें खड़े–खड़े ही जाना पड़ा। लेकिन फिर बैठने के लिए सीट मिल गई। बस में मैं बैठी रास्ते भर मेले के बारे में ही सोचती रही। वहाँ तरह–तरह के झूले होंगे, अच्छे–अच्छे खिलौने मिलेंगे। यह सोचते–सोचते हम कब राजिम पहुँचे, पता ही नहीं चला।

घर पर मामा हम लोगों का इंतजार कर रहे थे। मुझे देखकर उन्होंने मुझे गले से चिपका लिया। वे बोले, ''सत्तो, तू आ गई। सब लोगों के साथ मेला देखने में आनंद आएगा। शाम को सब मेला देखने चलेंगे।''

मैंने मामा से पूछा, ''मामा, इस मेले के बारे में कुछ बताइए।''

वे बोले, ''यह मेला हर वर्ष माघ माह में लगता है। पूरे महीने यहाँ खूब रौनक रहती है। माघी पूर्णिमा को इस मेले की शुरुआत होती है और महाशिवरात्रि को समापन। यहाँ भगवान राम का राजीवलोचन मंदिर और कुलेश्वर महादेव मंदिर हैं। यहाँ तीन नदियों–सोंढूर, पैरी और

शिक्षण–संकेत : पत्र के संबंध में उसकी आवश्यकता और महत्त्व पर चर्चा कीजिए। पोस्टकार्ड, अन्तर्देशीय और लिफाफा, जिन पर पत्र भेजे जाते हैं, दिखाइए। इस पत्र के स्वरूप पर चर्चा कीजिए। किसने लिखा है, किसे लिखा है, कब लिखा है, क्या लिखा है, चर्चा के बिंदु हों।

महानदी– का संगम होता है। इसलिए इसे त्रिवेणी संगम भी कहते हैं। राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग भी कहते हैं। मेले में बहुत सारे खेल–तमाशे आए हैं। तू देखेगी तो नाच उठेगी।''

हम लोग जल्दी–जल्दी नहाए, हमने खाना खाया और फिर हम मेला जाने के लिए तैयार हो गए। मामा जी के घर से मेले का स्थान थोड़ी ही दूर पर था। मेले से लाउडस्पीकर की आवाजें दूर–दूर तक सुनाई पड़ रही थीं। गाने भी हो रहे थे। बातें करते हुए हम लोग चल रहे थे। मामा जी पिता जी को राजिम के मंदिरों के बारे में बता रहे थे। मुझे तो उन बातों में कुछ मजा नहीं आ रहा था। मेरे मन में तो ऊँचे–ऊँचे, गोल–गोल झूले घूम रहे थे। खिलौनों की दुकानें, चाट दिमाग पर छा रही थीं। पन्द्रह–बीस मिनट में हम मेले में पहुँच गए।

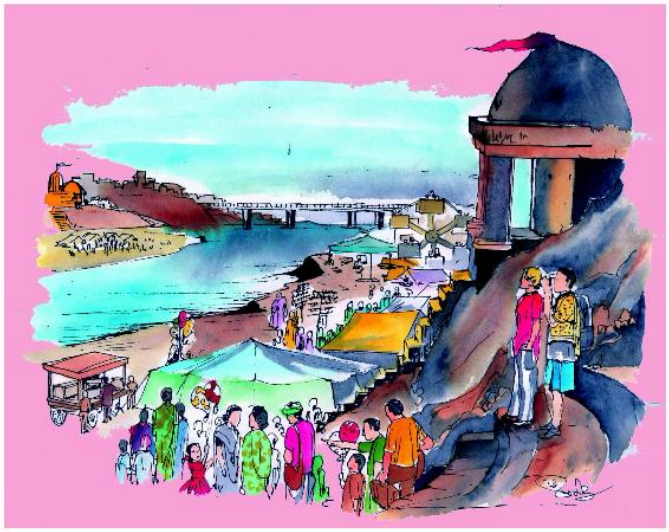

मेले में खूब भीड़ थी। तरह–तरह की दुकानें सजी थीं। छोटे–बड़े कई तरह के झूले थे। कोई बहुत ऊँचे–ऊँचे थे तो कोई चक्कर में चलनेवाले थे। खिलौनों की दुकानें तरह–तरह के खिलौनों से सजी थीं। जगह–जगह गुब्बारेवाले खड़े थे। खाने–पीने की छोटी–छोटी दुकानें लगी हुई थीं। मामा ने पहले तो मुझे गोलवाले झूले में झुलवाया, फिर ऊँचेवाले झूले में वे खुद भी मेरे साथ बैठकर झूले। ऊँचेवाले झूले में बैठकर बहुत मजा आया। इसके बाद मैंने एक बड़ा–सा गुब्बारा खरीदा। तभी माँ ने एक दुकान की तरफ मेरा ध्यान दिलाया जहाँ पर एक बहुत ही सुंदर गुड़िया रखी थी। वह गुड़िया मुझे बहुत पसंद आई। मैंने उस गुड़िया के लिए माँ से कहा तो माँ ने मुझे गुड़िया दिला दी। पिता जी ने मुझे एक बड़ा–सा खिलौना दिलाया। एक दुकान पर बहुत सुंदर चूड़ियाँ थीं। मैंने खुद अपने लिए चूड़ियाँ खरीदीं। मेले से निकलते हुए एक दुकान के कोने से लगकर मेरा गुब्बारा फूट गया। मामा हम

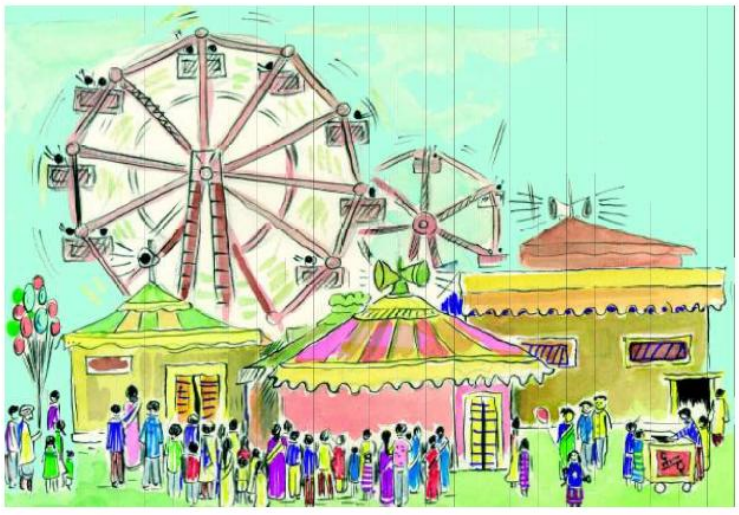

सबको चाट की एक दुकान पर ले गए। सबने चाट खाई। रात होते–होते हम मामा के घर पहुँच गये।

मेले के बारे में बताने लायक बहुत सारी बातें हैं लेकिन अब नींद आने लगी है। जब मिलूँगी तब और बातें बताऊँगी।

तुम्हारे पत्र की प्रतीक्षा में

तुम्हारी सहेली

सरिता

शब्दार्थ

पूर्णिमा	–	वह रात जिसमें पूरा चाँद निकलता है ।
त्रिवेणी	–	जहाँ तीन नदियाँ आपस में मिलती हैं।
प्रतिवर्ष	–	हर साल
प्रयाग	–	इलाहाबाद (प्रयाग प्राचीन नाम हैं)
समापन	–	समाप्त होना/खत्म होना

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 यह पत्र कहाँ से लिखा गया है ?

प्रश्न 2 इस पत्र का मुख्य विषय क्या है ?

प्रश्न 3 यह पत्र किसने किसको लिखा ?

प्रश्न 4 राजिम का मेला किस माह में भरता है ?

प्रश्न 5 राजिम किन नदियों के संगम पर बसा है ?

प्रश्न 6 किसी भी मेले में बच्चों के आकर्षण की कौन–सी चीज़ें होती हैं ?

प्रश्न 7 त्रिवेणी से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 8 राजिम को छत्तीसगढ़ का प्रयाग क्यों कहा जाता है ?

प्रश्न 9 तुमने किसी मेले में झूला अवश्य झूला होगा। अपने अनुभव लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के अंत में दिए शब्दों एवं शब्दार्थों को शुद्ध उच्चारण सहित पढ़ो और समझो। पुस्तक को बंद कर लो। एक बच्चा इन शब्दों को बोले, शेष बच्चे लिखें। लिखने के बाद बच्चे अभ्यास पुस्तिकाओं को एक दूसरे से अदल–बदलकर उनकी जाँच करें।

समझो

- कभी–कभी एक ही शब्द का एक साथ दो बार प्रयोग होता है। ऐसे शब्दों को 'पुनरुक्त शब्द' कहते हैं; जैसे –

  ''सड़क के किनारे–किनारे वृक्ष लगे हैं।''

प्रश्न 1 इसी तरह के चार पुनरुक्त शब्द बनाओ और उनका वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 2 नीचे चौखटे में कुछ शब्द और उनके विपरीत अर्थवाले शब्द दिए गए हैं। इनकी जोड़ी बनाकर लिखो।

सुख, प्रसन्न, असफल, अप्रसन्न, ऊँचा, दुख, बुद्धिमान,
सफल, पसन्द, थोड़ा, नीचा, बुद्धिहीन, नापसंद, बहुत।

प्रश्न 3 दिए गए शब्दों के अंत में 'इक' लगाकर नए शब्द बनाओ। जैसे,

उदाहरण–	सप्ताह	–	साप्ताहिक	वर्ष	–	वार्षिक
	परिवार	–	.....	दिन	–	————————
	मास	–	.....	संसार	–	————————
	व्यवहार	–	.....	शरीर	–	————————
	समाज	–	.....	देह	–	————————

प्रश्न 4 इस पत्र में एक लड़की ने दूसरी लड़की को 'प्रिय सहेली' लिखा है। तुम बताओ कि इनको पत्र लिखने पर क्या लिखकर संबोधित करोगे/करोगी–

– मित्र/सहेली को
– बड़े भाई/पिता जी/माँ को
– छोटे भाई को/छोटी बहिन को।

रचना

- अपनी किसी यात्रा या विद्यालय के किसी कार्यक्रम का वर्णन करते हुए अपने/मित्र अपनी सहेली को पत्र लिखो।

पढ़ो और जानो

क. अपने से बड़ों को पत्र लिखते समय संबोधन में आदरणीय, पूजनीय, पूजनीया, पूज्य लिखते हैं।

ख. अपने से छोटों को पत्र लिखते समय संबोधन में आयुष्मान, चिरंजीव तथा बराबर उम्रवालों को प्रिय, बंधुवर, मित्रवर, प्रिय सहेली आदि लिखते हैं।

ग. पत्र के ऊपर दाहिनी ओर पत्र पर भेजनेवाले का पता और उसके नीचे दिनाँक लिखा जाता है।

यह भी जानो

- जनश्रुतियों के अनुसार राजिम नाम की तेली समाज की एक महिला इस स्थान पर रहती थी। एक दिन वह रास्ते में पत्थर से टकराकर गिर गई । उसके सिर पर रखा तेल का पात्र भी गिर गया। वह डर गई कि घर पर उसे डाँट पड़ेगी। वह पत्थर पर बैठकर रोने लगी। अंत में पात्र उठाकर जब वह घर जाने लगी तो उसने देखा कि पात्र में तेल भरा हुआ है। वह रोज उस पत्थर पर अपना पात्र रखकर तेल भरने लगी। एक दिन वह उस पत्थर को ही उठाकर घर ले आई। वहाँ के राजा जगतपाल को स्वप्न में मंदिर बनाने का आदेश मिला लेकिन स्वप्न में जो शिलाखंड दिखाई दिया था, वह राजिम तेलिन के पास था। राजा ने वह शिलाखंड उससे लेकर मंदिर में स्थापित किया। इसी से इस जगह का नाम राजिम पड़ा।
- राजिम से पंचकोसी की यात्रा जुड़ी है। छत्तीसगढ़ में पाँच ज्योतिर्लिंग हैं। वे सभी परस्पर आठ से दस किलोमीटर की दूरी पर ही हैं। बीच में कुलेश्वर महादेव हैं। इसी की चारों दिशाओं में श्री चम्पेश्वर नाथ (चंपारण्य), श्री ब्रह्मनेश्वर (ब्रह्मणी), श्री फणेश्वरनाथ (फिंगेश्वर) और श्री कोपेश्वर नाथ (कोपरा) स्थित हैं। इनसे ही पंचकोसी यात्रा जुड़ी है जो कार्तिक–अगहन से प्रारम्भ होकर पूस–माघ तक पूरी होती है।
- राजिम में श्री खंडोवा–तुलजा भवानी का मंदिर भी है। यह मराठा समाज की तीर्थस्थली के रूप में प्रसिद्ध है। इसका मूल मंदिर पुणे शहर में है।
- दानेश्वरदास मंदिर को गुफावाले महादेव का मंदिर भी कहा जाता है।

योग्यता विस्तार

4V5GWA

- छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध तीर्थ–स्थलों की जानकारी एकत्रित करो।
- शाला वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपने शिक्षकों की सहायता से शाला प्रांगण में मेले का आयोजन करो।

पाठ 17

क्रूसोस गहि लड़ाई ख़ीरी

बिपइत बारी ओरमर ती कोहां संग्गे डिड़गर अरा ढाड़स हिके। अगर बिपईत नू र'ऊ आलस, डिड़गर अरा ढाड़स आबोन अम्बोस चिओस, होले आस ही बिपईत माल बोंगो। ई ख़ीरी नू क्रूसो'नामे ही कुकोस बिपईत नू र'अर कि डिड़गर अरा ढाड़स ती नलख नज'स, अदिगे आस तंग्हे जिन्दगीन बछाबआगे उगियांस।

इग्लैंड नू यार्क नामे गही ओंटा नगरे र'ई। इन्नाती साढ़े मून्दसुड्डी बच्छर मुंध असन ओंटे धनीमनी धंधा ननू आलस रहचस। आस ही मून्दता खद्दस अन्नैत डिड़गर रहचास। आस गहि नामे रांबिन्सन क्रूसो रहचा। आ जोंखस समुदर कालागे उर्मी उल्ला तरसा र'आ लगियस पंहे आस गहि तम्बस आसिन जहाज तु ननातरा काला माल चि'आ लगियस। क्रूसोस गहि तम्बस ही ओंटे संग्गियास जहाज ही कपतान रहचस। आस ही तंगदस गने क्रूसोस ही संग्गे मंजा केरा। जहाज कपतानस गहि आ ख़ददस समुदर केरका बरचका रहचस। ओंगहोन क्रूसोस तग्हैं पुना संगेसिन बाचस, ददा! एन हूँ गेच्छा गेच्छा अड्डा समुदर नू काला बेददन।

संगेस क्रुसोसिन तिंगियस का बरना सानिचर उल्ला एम्हैं जहाज दखिण अमेरिका कालू र'ई। इदिन मेनरकी क्रूसोस समुदर नू कालागे बिदि्दयस।

तम्बासिन बेंगर मेनम आस जहाज हेददे आंडसियस केरस। जहाज गहि कपतानस बुझरस कि क्रूसोस तम्बासिन मेनर किंम बरचका रअदस। आदिगे आस आसिन तग्हैं संग्गे होच्चस केरस। क्रूसोस ही एंवदा मल एंवदा उल्ला ता पाब एरना, चॉड़ पूरा मंजा केरा।

क्रूसोस आ जहाज ती ए मल ए बग्गे राजीन ईरियस। डहरेनू बरन–बरन ही ओड़ा ख़ाख़ा अड्डो मेखो अरा भिने–भिने रंग रूप ही आलर ख़क्ख़र्र। एसता–एसता टापू नू गा आल पिटु आलर हूं रहचर।

ओग्होंन डहरे नू समुदर ही मुरूख़ कोहां हलपा बरचा। मेच्छा–मेच्छा समुदरता अम्म ही हलपा जहाज नू बजड़र'आ हेल्लरा। जोक्क बेड़ा ख़ोख़ा ताका अरा हलपा ती जहाज ओंटा कोहांम चट्टान तरा बोहारते काला हेल्लरा। जहाज ता कपतानस अरा डोंगेइत आलर ही मदैत ती अइया उक्का आलर ननाओंटे डोंगा नू उक्कियर केरार।

बचताअना–डहरे–

ख़ददारिन तेंग्गा कि इन्ना नाम जे बांचना बचओत आद अग्रेंजी गहि कोहांम परसिद ख़ीरी ती र'ई। अयंग–बंगरिन बेंगर तिंग्का ओंटे खद्दस, तग्हैं अख'ऊ संगेस गने समुदर नू कुद्दा कादस। मुद्वा हलपा नू बझर'अरकी आर गहि जहाज इसिर'ई मुरचर'ई काली। ख़द्दस एक'अम अन्ने ओंटे सुनसान टापू न अंड़सदस कादस । असन आस अनैत बरन ही ससाईत नू र'अर कि एंवदा साल गूटी र'अदस कादस। असगे ओंटा संजोरा मनी, आस ओटे नन्ना जहाज नू ओक्कारकी अस्तेक किरदस बरदस। ख़द्दास गहि डिढ़ अरा लूर नू कत्था तेंग्गा।

डोंगा तनिक गेच्छा केरा का मला, ओंटे कोहांम 'हलपा' आदिन बिड़दा चिच्चा। ओरमा आलर समुदर नू मुलख़ा हेल्लरार।

क्रूसोसिन हलपा समुदर धरी नू हिंबड़िया चिच्चा। ई 'अकलक' नू आस बेहोस मंजास केरास, अरा बेहोशी हालत नू आस असानुम हेबेड़रका रहचास। चेंत बरचा खन्ने कुहरारनुम चोचास अरा एकआम बसे हेद्दे ता ओंटे सन्नी परता नू अरगियास केरास।

जहाज ता नन्ना आलारिन पता ननागे आस चौगिरदा इरियस। पहें ने हूँ माल एथर्र। आस अन्नैत एलचियस अरा सोच्चास कि उर्मी तंग्है संग्गेर मुलख़ियर केर्र, तान एकला ई टापू नू ऱअदस। आस पुरूर लेक्खा अतरा–इतरा बोंगोर नखरा हेल्लरस।

जोक्क बेड़ा ख़ोख़ा उख़ा मंजा केरा। क्रूसोस लिटलिटा ख़ड़िदका रहचस। औंगेम आस खंदर'आ हेल्लरस। पंहे आ अनजान अडडानू बेर्डना जोगे अड्डा एकसन हूँ मल रहचा। एसन आस बने र'आ ओंगोस। उर्मी अड्डा परताता जऊँत अरा आल मुखू आलर गहि इलिचका रहचा। अखिर नू क्रूसोस ओंटे मन मंईया अरगियास केरस अरा मन गहिं ओन्टा कोहांम डाड़ा नू आराम नन्ना हेल्लरस।

पइरी बीरी ओड़ा ख़ाखा गहि चेरे–बेरे मनन मेनर की आस एजरस केरस। आस इरियस का समुदरता हलपा मड़चकी रहचा अरा समुदर हूँ सुनसान रहचा। मन ती एत्तर की आस समुदर तरा केरस।

आस एरियस, जहाज समुदर ही धरी, जोक्क गेच्छा नू इसरकी–मुरचुरकी र'ई। आस अम्म नू बोंग कोरचस अरा जहाज मुंह्ववारे अड़िसियास केरस। किस्मत ती जहाज ता मईतला खण्डा ख़ाईका रहचा। आ खण्डा नू ओन्ना–मोख़ना गहि आलो निंदकी रहचा।

आस ओंटे बिस्कुट पुड़ियन इरियास अरा कीड़ा ती बिस्कुट गे बोंग केरस। आखरी नू कूल उड़चा ख़ाने आस जहाज ता बछरका आलोन बेद्दा कुद्दा हेल्लरस।

आस जहाजती कंक गहि मून्द नाख तख्ता ओथरस अरा आदिन हेंचस की ओंटे सन्नीम काम चलवा डोंगा कमचस। जहाज मइंय्या आस गोहोम तीख़ील किचरी अरा बन्दूक गोली कुटासी कॉटी बेसे बग्गे नलखनू बरउ आलोन उइयस। अरा डोंगन समुदर गहि धरीतरा होच्चस केरस।

ओटे मन पेन्दा चौकस अड्डा रहचा। आदही ओन पक्खे मेच्छम चट्टान रहचा। कूसोस इदहि मदैत ती जहाज ता पाल गहि कुम्बा कम'अर की ओंटे डेरा कमचस। अरा अन्नूम बछरका आलोन ओदर'अर की उइयस। आस नितकी नियम ती जहाजता बछरका आलो ती अरा नलख नू बरउ आलोन डोंगानू लच–लच डेरा नू ओंदरते रहचस। मुंदा दोय ओंद उल्ला ख़ोख़ा ओंटे कोहोंम हलपा बरचा। अरा आ जहाज आबोन मुलखा चिच्चा।

आ माल चिन्हरना टापू नू क्रूसोस 3 सितम्बर 1659 ईस्वी नू अड़सियस । आस कंक ही ओंटे तख्त नू तंग्हैं असन अडिंसका गही नेड्डा तूड़ियास की टंगचस चिच्चस। आ नेड्डा गहि किया आस नितकी कोहांम चिन्हा कम'आ लगियस, महिना पूरनागे ओंटा मोट लाकीर नतगा लगियस।

उन्दुल क्रूसोस ईरियस– कि जे ख़ेस्स–तिख़िलन जहाज ता कोठ्ठी एड़पांती ओथोरका ओंदरका रहचस आद मून्द–नाख महिना ती बग्गे मल पूरओ। पंहे आस सोच्चस की अक्कु खेती माल नन्जकुन उज्जा माल सकार'ओ। औंगेम अन्ति आस खेती ननागे दौ ख़ेख़ेल बिद्दियास।

असान ख़ल्ल कम'अर की क्रूसोस गोहोम चांखस। अदिन अम्म पटा बआगे, आस खल्ल गूटी एम्बा अम्मू गहि ओंटा नली कमचस। ख़ल्लन आस घोरनाती घेरचस चिच्चस। एंदेरगेका परता ता जऊँत खेती आबोन बरबद्द अम्बान ननाा। खल्ल हेददे ओन्टे मचा कमचस। एसतेक आस खेतीन एरा–ख़ोज ओंगोस।

आ मलका टापू नू रअनूम कूसोस कई बच्छर बिता बाचस चिच्चस। आस ही गोच्चो अरा कूक ता चुटटी दिगहा–दिगहा परदिया केरा। आस गहि किचरी ढेर उल्ला मुरखेम चर्रकी किरकी रहचा। आस परतान्ता कोटरा ही चपटा, गहि किचरी अत्ता लगियस। अक्कू आसगे तग्हैं मुंही दिम तंग्गागे अन चिन्हार लग्गा हेल्लरा। अक्कु आसगे तग्हैं राजी अंड़सागे, मलता एक'अम आलर ती कच्छनखरआ ओंगागे ओन्टा हूँ असरा माल रहचा।

उन्दुल आसगे तंग्हैं डेराती ढ़ेर गेच्छानू जोक्क कुहड़ा चोअना बेसे एथरा। आदिन अख़आगे आस धीरे–धीरे अत्तरा केरस। आस इरियस की चिच्च गहि ओन भंवरी उक्का जंगली आलर ओंटे कोहांम सजगी नू, एन्द्र–आम इरता लगियर। जोक्क जंगली आलर नला लगियर। हेद्दे नू एँड़ झन आलर रहचर! आर ही ख़ेड्डे–खेख़ा हेरकी रहचा। नलू आलर मंधे नू ओरतो आलस ओरतोसी कुक्कनू गद्दा लवचस ख़ने, आस बहोश मंजस केरस। नन्ना नलू आलर तलवार ती आसिन कुट–कुटा खंडियर चिच्चर।

ऐका बेड़ा नू ओरमा आलर आ आलासिन मोचा लगियर। आ बेड़ानू नन्ना आलस एक'अम बेसे तंगन छोड़ा बाचस ती बोगस केरस। एँड़ झन आलर आसिन धरआगे कुदा बाचर। खन्ने क्रूसोस आरिन इजआगे बाचस। इलचिका ती आ बुंग्गु आलस क्रूसोस गहि खेड्ड मूली ख़त्तरस केरस। आसिन कुदा ब'ऊ आलर आस गहि हेद्दे अड़सियर ख़ने क्रूसोस ओरतोसिन बदूक ही गोली ती पिटयस चिच्चस। आद ही ख़ोख़ा आस ही नन्ना संगेस कन्ना चला ब'आ बेददा लगियस खन्ने अन्ति क्रूसोस आसिन हूँ गोली ती पिटयस चिच्चस।

क्रूसोस तग्हैं खेड्ड पेन्दा नू खतरका जंगली आलासिन उठा बाचस, ने जे इलचिका ती असरा लगियस। क्रूसोस आसगे डिढ़ चिच्चस अरा आसिन तंग्हैं डेरा नू होच्चस केरस। क्रूसोस आस गहि कत्थन मेनर की नगदे खुसमारस। एन्देरगे का आ मलका टापू नू एक'अम आलर ही कत्थान माल मेंजका रहचस। आ आलस क्रूसोस ही संगे र'आ हेल्लरस। क्रूसोस आसिन फ्राइडे ब'आर की मेखा हेल्लरस। एंदेर गे कि आस आसिन सुक्रवार उल्ला भेंटारका रहचस। धीरे–धीरे क्रूसोस फ्राइडे सीन कंटिक अंग्रेंजी कत्था सिखा बचका रहचस अरा फ्राइडेस हाँ अरा मला नू कत्थन किर्त'आ लगियस।

ओंद उल्ला कूसोस अचाका टापू हेददे ओंटे जहाज ईरियस। आद धरी नू इजआगे लंगर लगा बआ लगिया। जहाज नू लइका झंडा ती आस अख़ास होच्चस की आद अंग्रेजर ही जहाज तली। जहाज गहि कपतान अरा जोक्क डोंगा चला ब'उर गने कत्था–कत्था नू झगड़ा मंजकी किरकी रहचा। आद बढ़रते केरा ती डोंगा चला बउर, जहाज गही, कपतान सी खेड्डे–ख़ेखान हेचर चिच्चर अरा आसिन समुदर धरी नू हिबिड़ियर चिच्चर। अदि गहि ख़ोख़ा आर टापू कुद्दा केरिम बिच्चियस। क्रूसोस अरा फ्राइडेस जहाज गहि कपतान सी हेच्चकन कुल्लियर चिच्चर–अरा आस गही खीरी मेंजर। गलती डोंगा चला बउ'र ही रहचा कपतान सी मला। क्रूसोस अरा फ्इडेस डोंगा चला बउ'र हीं किरकाती आरिन बन्दुक ती लवचार चिच्चर।

जहाज गहि कपतानस क्रूसोसिन बेस सहरारस। आस क्रूसोस गहि खीरीन मेंजस। जहाज ही कप्तानस क्रूसोसिन अरा फ्राईडे सीन तंग्हैं संग्गे इंग्लैंड होच्चस केरस। अयंग राजी गहि ख़ज्जोन एवंसर'अर की क्रूसोस गहि ख़न्नती ख़ंजलखो चुंरख़ा हेल्लरा।

बक्क गहिमानें

धनी–मनी– उरूब। जहाज नू लंगर टिड़ना– जहाज आबोन ठहरा'अना। मूली– पेन्दा। बेहड़ारका– एबेसरका बेसे, बंहगर – सवंगिया। इजना– रूकरना। रिझिरना– खुशमारना। पईतारना– पसंद नन्ना। पिटना– लअनाती जियन होअना। सहरारना– बढ़ाई नन्ना। आल मोखू– आलर गहि अहड़ा मोखू आलर। जंगली आल– परताता नू रउ आलर। नलू– नलू आलर। ढेर अउलाती असरा एरना– ढ़ेर अउलाती पाब एरना।

मेनता अरा हेभेरना

मेनता अख़ना

कक्षा, आबोन एँड़ खोड़हा नू खट्टर की मेनता–मेंजख़ा ननताआ अरा जोक्क मेनता एन्ने हूँ मना उंग्गी।

क. इ ख़ीरीता मुन्धस ही पूरा नामें एन्दरा हिके ?

ख. ख़ीरी ही मुन्धस एसतास रहचस ?

ग. ख़ीरी ही मुन्धस गे एन्देरा ही बग्गे इच्छा र'आ लगिया ?

खद्दर ही मेनता–मेंजखा ख़ोख़ा मस्टरस हूँ एँड़ों खोड़हा ता खद्दारिन बारका मेनता मेनोस।

मेनता 1. ई मेनता ही मेंजख़ा तूड़ा–

क. क्रूसोस नेकन हूँ बेगर तेंगम जहाज हेद्दे एंदेरगे अड़सियस?

ख. क्रूसोस एकासे विपाइत नू मंजास ?

ग. क्रूसोस आ सुनसाम अड्डा ता बिपइत नू एकासे उल्ला बिता बाचस ?

घ. क्रूसोस फ़ाईडेसीन एकासे बछा'बचस ?

ङ. क्रूसोस जहाज गहि कपतानसिन एकासे बछा–बाचस ?

च. मान'आ नीनिम एन्ने विपाइत नू रहचका होले एकासे ननोय पहें।

मेनता 2. क्रूसोस तंम्हैं एड़पा तारिन बेंगर तिंग्का समुदर नू कुद्दा चाईल केरका रहचस। निम्हैं एरना नू आस ही नलख सही रहचा मलता गलत। एंदेरगे ?

मेनता 3. किइय्या खीरी गहि बितिरका कत्था तूड़तारकी र'ई, इदिन सरिया ती क्रम नू तूड़ा –

क. जहाज ही कपतान सी खद्दस कूसोस गहि संग्गे रहचस।

ख. जहाज गहि कपतानस क्रूसोसिन ढेर सहरारस।

ग. क्रूसोस समुदर हेद्दे कालागे तरसार'आ लगियस।

घ. ख़ल्ल नू अम्म ओंदरआगे आस नली आरख़ियस।

ङ. आसगे नेखय संगे हूँ कच्छनखरना ही असरा माल रहचा।

कत्था–बचना अरा कत्थअइन

इसन नाम सिखिरो'ओत–

बई चखना ही बकपून नू बेहवार ननाअर्जआनान चिन्हिना, अरा उपसर्ग लगा ब'आरकी पुना बक्क कमना।

बंचना गहि आखरी नू बक्क ही मानें चित्तरगी र'ई कक्षाता ओरमा खद्दर इदिन दौलेम फुटाब'अनुम बचओर। अदिही ख़ोख़ा ओंटे खद्दस ई बक्क आबोन बचओस अरा ननाख़द्दार मेनर की तूड़ोर। तूड़का कापीन आरी–पारी ननर की मास्टरस ही तिंगका बेसे जॉच'ओर।

कक्षा आबोन एँड़ खोड़हा नू ख़ट्टरकी, एँड़ो खोड़हातार तम्है मझही नू बक्क गहि मानें मेनोर अरा आदही बकपून नू बेहवार ननतोओर।

मेनता 1. ओंटे खद्दस जोक्क बक्कन एन्ने तूड़का रहचस–

रूचि, कुम्बा, नालूर, नाद, मूदाई, साल, फिरना, जोखस, बेगर, इलिचका, समाज, महिना, हात,।

इ बक्क नू जोक्क बक्क सही र'ई, अरा जोक्क सही मल्ला। एँड़ो मधहे बक्क आबोन भिन्ने चाजर की तूड़ा अरा सही मलका बक्क आबोन सही ननर की तूड़ा–

मेनता 2. किइय्या जोक्क बई चखना तूड़रकी र'ई अरा नना तरा आद ही मानें। बाई चखना अरा मानें ही सही जोड़ी कम'आ।

बई चखना	मानें
खेक्खानू धर्ररना	जियन ढिलना।
कूल पूखना	पिटना चिअना।
ख़ेबदन टिड़ना	एलचना।
ख़ोख़ा अम्बताअना	अचाका इन्दरि'ईम आलो खखरना।

मेनता 3. किइय्या तूड़रका बई चखना आबोन निग्हैं बकपून नू बेहवार नना– जिया ओलना , डहरे एकना, बोका कमना, ख़ेबदा–धरना।

ई बकपून आबोन बचआ अरा बुझुरआ

क. आस अम्मू पटा बआ'गे नाली अरखियस।

ख. आस तग्है सोना लेखा बेड़ान एबेसस चिच्चस।

मेनता 4. ई बकपून नू अर्जआनान चिन्हा, एँड़ो अर्जआना नू एंदेर अन्तर र'ई। तूड़ा–

एकम् एँड़ो बक्क नू इदिन बेहवार नना।

– क्रूसोस समुदर धरी कालागे बेचैन रहचस ।

– इ बकपून आबोन बचआ– क्रूसोस कुद्दागे कालागे बेचैन रहचस। बेचैन बक्क गहि कमरकन बूझर'आ। 'चैन' ही मुन्धेवारे बे ''लगाब'अर की बनरकी र'ई। इदही मायने हिके'' तरसारना।

मेनता 5. एँड़ो बक्क नू' बे ''जोड़'अरकी पुना बक्क कम'आ अरा अदिन निग्हैं बकपून नू बेहवार नना।

रासी अरा रासी ही रासी पइत्त नू नीम बचका र'अदर । ई पाठ ता रासी ही रासी ही पंचे जोड़ा चाजर की तूड़ा–एन्ने– ठहराचका नेड्डा, इन्नू ठहराचका रासी र'ई। अरा रासी नेड्डा रासी र'ई।

मेनता 6. ई पाठ नू नाख बकपून बेद्दरकी तूड़ा एकाईया जे रासी ही रासी गहि जोड़ा ही बेहवार मंजकी र'ई।

बेहवार ननताअना–

क्रूसोस आ सुनसान टोड़ांग नू तगांगे कुम्बा कम'चस । नीम हूँ निमागे कंक पुटठा कगाज गहि कुंबा कम'आ।

डोंगा,ख़ाड़, मंगर , ईवदम गहि छप्पा कम'आ।

जोगे–बढ़हाबअना–

क्रूसोस गहि आचका बेगर तिंक्का एड़पान्ती केरका नू आसही तंगियो तम्बार ही एन्देरा बितरा नेख'अन। बुझुरा'अर की कक्षा नू तेंग्गा।

क्रूसोस एका खन्ने, आ टापू नू ओरोत एकला रहचस होई। होले आस एन्दरा सोचआ लगियस। बुझुरआ ती तेंग्गा।

क्रूसोस एका बारी तम्हैं एड़पा आड़िसियस खन्ने आस गहि एड़पा ता आलर ही एन्देर हाल मंजा नेख'अन कारण सहित तेंग्गा।

RDYY9P

बचताअना–डहरे

बिपइत ही बेड़ानू उर्मी ती कोंहा संग्गे हिम्मत अरा धीरज हिके। अगर बिपइत नू बझरका आलस हिम्मत अरा धीरज आबोन अम्बोस चि'ओस होले आस गहि बिपाइत गेच्छा माल मनो। ई ख़ीरी नू क्रूसो नामे गहि ख़द्दस बिपाइत नू बझरअर कि हिम्मत अरा धीरज ती काम नंदस। आदगे आस तंग्हैं जिन्दगीन बच्छाबआगे सफल मंजस।

4VX528

पाठ 18

पिंजरे का जीवन

मनुष्य हो या पशु–पक्षी, बंधन किसी को पसंद नहीं। मनुष्य अपने स्वार्थ–साधन, सेवा और मनोरंजन के लिए पशु–पक्षियों को पालता है। वे विवशता में बंधन में बँधते हैं, जबकि वे मन से स्वछन्द जीवन जीना चाहते हैं। इस कविता में बंदी तोते को सुखी जानकर एक मैना स्वयं उसके स्थान पर बंदी बन जाती है और तोते को स्वतंत्र कर देती है लेकिन बाद में वह पिंजड़े के जीवन से दुखी होती है।

पिंजरे के तोते से बोली
छत पर बैठी मैना।
"बड़े मजे से तुम रहते हो
बोलो ये सच है ना ?
बैठे–बैठे मिल जाते हैं
भाँति–भाँति के व्यंजन।
काश! मुझे भी मिल पाता
जो इस पिंजरे का जीवन।

भोजन औ जल की तलाश में
हम दिन–रात भटकते।
तब जाकर दो–चार अन्नकण
अपने पल्ले पड़ते ।।

शिक्षण–संकेत : *पालतू पशुओं और पक्षियों के संबंध में कक्षा में चर्चा कीजिए। छात्रों पूछिए कि यदि उन्हें बहुत अच्छा खाना दिया जाए, रहने के लिए सब आराम दिए जाएँ और उन्हें एक कमरे में बंद रखा जाए तो कैसा लगेगा? यही बात पक्षियों के संबंध में है। हम अपने मनोरंजन के लिए उन्हें पिंजरों में बंद रखते हैं– यह बहुत अनुचित है। कविता में मैना तोते के सुखमय जीवन के लालच में स्वयं पिंजड़े में बंद हो जाती है। और फिर वही स्वतंत्रता पाने को पछताती है कविता को लय–स्वरपूर्वक सुनाएँ और बच्चों से अनुकरण वाचन कराएँ। एक–एक विद्यार्थी से एक–एक छन्द वाचन कराएँ। बाद में कविता का अर्थ स्पष्ट करें।*

उस पर हरदम चिड़ीमार का
डर रहता है मन में।
हिंसक जीव–जंतुओं का
भीषण खतरा है वन में।।''

तोता बोला, ''अगर सोचती
हो सुख है पिंजरे में,
मुझे निकालो, आओ अंदर
मैं जाता हूँ वन में।।

तुम ले लो पिंजरे का सुख
मैं लूँ जंगल की पीड़ा।
बड़े मजे से रहना इसमें,
करना निशि–दिन क्रीड़ा।।''

मैना ने खोला दरवाजा
जैसे ही पल–छिन में।
मैना को अंदर कर तोता
खुद उड़ गया गगन में।।

चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने को अकाश में ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।।

भाँति–भाँति के भाते थे
उसको ना कोई व्यंजन।
ना आराम सुहाता उसको
ना पिंजरे का जीवन।।

शब्दार्थ

भाँति–भाँति	– तरह–तरह		भीषण	–	भयंकर
व्यंजन	– खाने की अच्छी वस्तुएँ		क्रीड़ा	–	खेल
हिंसक	– मारनेवाला		सुहाना	–	मनोहर, अच्छा लगना
छिन	– क्षण		पल–छिन	–	थोड़ी देर में।
चिड़ीमार	– पक्षियों को पकड़ने तथा मारनेवाला।				

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 इस कविता में किस–किस पक्षी के बीच बातचीत बताई गई है ?

प्रश्न 2 पक्षी के लिए पिंजरे का जीवन दुखदाई क्यों होता है ?

प्रश्न 3 अगर तुम्हें खाने–पीने, आराम करने का सारा सामान रखकर किसी कमरे में बंद कर दिया जाए, तो तुम्हें कैसा लगेगा ? अपने शब्दो में लिखो।

प्रश्न 4 पिंजरे के बाहर रहनेवाली मैना ने पिंजरे में बंद तोते से यह क्यों कहा, 'बड़े मजे में तुम रहते हो।'

प्रश्न 5 पिंजरे में बंद हो जाने पर मैना दुखी क्यों रहने लगी ?

प्रश्न 6 "हिंसक जीव–जन्तुओं का भीषण खतरा है वन में", वन में पक्षियों के हिंसक जीव–जन्तु कौन–कौन–से होते हैं ?

भाषातत्व और व्याकरण

- पाठ में से कविता की चार पंक्तियाँ शिक्षक बोलें और बच्चों को लिखने को कहें। परस्पर कॉपियाँ अदल–बदलकर उन्हें जाँचने को बच्चों से कहें। अंत में शिक्षक इन पंक्तियों को श्यामपट पर लिखें और बच्चों को पुनः जाँच करने को कहें।

पढ़ो और समझो

- 'गैंडा' और 'मच्छर' दोनों पुल्लिंग शब्द हैं। इनके स्त्रीलिंग रूप नहीं होते। इसी प्रकार चील और मैना स्त्रीलिंग शब्द हैं। इनके पुंल्लिंग रूप नहीं होते।

प्रश्न 1 ऊपर उदाहरण में बताए शब्दों के अतिरिक्त पुल्लिंग और स्त्रीलिंग शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

- दो शब्द हैं– अगर और मगर। दोनों शब्दों में कोई मात्रा नहीं लगी है।

प्रश्न 2 ऐसे ही पाँच बिना मात्रा वाले शब्द लिखों जिसके अंत में 'र' वर्ण आता हो।

- कभी–कभी दो विलोम शब्दों का प्रयोग एक साथ होता है, जैसे

  करते निशि–दिन क्रीड़ा

  हम दिन–रात भटकते।

  यहाँ निशि–दिन का अर्थ है, रात–दिन, जो कि एक दूसरे के विलोम शब्द हैं।

प्रश्न 3 ऐसे दो वाक्य लिखो जिनमें इसी प्रकार के दो विलोम शब्दों का प्रयोग हुआ हो।

प्रश्न 4 'हर' में 'दम' लगाकर 'हरदम' शब्द बना है। 'हर 'लगाकर दो शब्द और बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 नीचे लिखे शब्दों की समान ध्वनिवाले दो–दो शब्द लिखो

जैसे – तोता, होता, सोता।

जंगल, मंगल, दंगल।

प्रश्न 6 व, म, न, र, क वर्णों में से दो–दो वर्णों के जितने शब्द बना सकते हो, बनाकर लिखो, जैसे – मन, कम।

समझो– कुछ शब्दों के लिए दो या अधिक शब्दों का भी प्रयोग होता है जैसे गंगा के लिए सुरसरि, भागीरथी भी कहते है। इन्हें गंगा का पर्यायवाची शब्द कहते हैं;

प्रश्न 7 दिए गए शब्दों में से शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द अलग–अलग करके लिखो।

जंगल, आकाश, दिन, जल, गंगा, दिवस, नीर, नभ, कानन, दिवा, स्वप्निल, वन

रचना

- इस कविता को कहानी के रुप में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते, कागज, रुई आदि की सहायता से पक्षियों के नमूने बनाओ, उनमें रंग भरो।

योग्यता–विस्तार

- नीचे लिखी कविता पढ़ो और कविता में ही पूछे गए प्रश्न का उत्तर कक्षा में बताओ।

कौन तुम्हें अच्छा लगता है ?
बंदी तोता, उड़ता तोता ?

नभ में उड़नेवाला तोता
टें–टें करनेवाला तोता ।
पेड़ों पर जो सो जाता है
जो चाहे सो फल खाता है।

वन में उड़े बाग में आए
कुतर–कुतर कच्चे फल खाए।
पिए नदी का ठंडा पानी
करे जंगलों में मनमानी।

दूध–भात जो नित खाता है,
पिंजरे में जो सो जाता है।
राम–राम कहता है दिन भर
पिंजरे में रहता जीवन भर।

जो न कभी उड़ पाया वन में
जो न उड़ेगा अब आँगन में।
जिसे न अब कुछ भी करना है
पिंजरे में जीना–मरना है।

4H713V

कौन तुम्हें अच्छा लगता है ?
बंदी तोता, उड़ता तोता ?

पाठ 19

हाय मेरी चारपाई

होली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का त्योहार है। लेकिन इसमें बहुत–सी बुराइयाँ आ गई हैं। हँसी–खुशी के वातावरण में त्योहार मनाने की जगह इस त्योहार पर लोगों का परस्पर एक दूसरे पर कीचड़ डालना, गालियाँ देना, चोरी के सामान से होली का झाड़ भरना आदि कार्यों से इस त्योहार का महत्व कम होता जा रहा है। इसी तरह की एक घटना इस कहानी में पढ़िए।

बात उन दिनों की है, जिन दिनों मैं निकर पहनता था; यानी छोटा भी था और शरारती भी। मौज–मस्ती के दिन थे; चिंता–फिक्र कोई थी नहीं।

इस वर्ष की तरह उस वर्ष भी होली आई थी। मुहल्ले में होली जलाने के लिए लकड़ी जमा करने की समस्या थी सो आसपास से जितने लकड़ी–फट्ठे इकट्ठे किए जा सकते थे, वे पर्याप्त नहीं थे। इसलिए तय हुआ कि मुहल्ले के पीछे की पहाड़ी से कुछ सूखी झाड़ियाँ काट लाई जाएँ।

आखिर होली का दिन आ गया, लेकिन होली का झाड़ अभी पहाड़ नहीं हो पाया था। दोस्तों की चिंता को देखते हुए मैंने मंडली को सुझाव दिया, ''क्यों न कुछ लोगों के यहाँ से चारपाई, लकड़ी के फाटक, कुर्सी–मेज और ऐसा कोई भी सामान, जो बाहर रखा हो, उठा लिया जाए। इस काम में मुहल्ले के खूसट और गुस्सैल लोगों का विशेष ध्यान रखा जाए, जिन्होंने हमें वर्ष भर सताया है।'' सुझाव मान लिया गया।

अब क्या था ? सारी मंडली चार–पाँच टुकड़ों में बँट गई। हर टुकड़े में तीन–चार लड़के थे। सबने अपने–अपने घरों से दूर के इलाके चुने और हमारा अभियान शुरू हो गया। फिर तो तरह–तरह का लकड़ी का सामान आता रहा और टूट–टाटकर होली के झाड़ में पड़ता रहा। कुछ ही घंटों में झाड़ का पहाड़ बन गया।

मैं अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहा था; मेरे साथ तीन लड़के और थे। हम लोगों ने मास्टर रतिलाल और पंडित गंगाप्रसाद की चारपाई, मन्ने साव का फाटक, हरीचंद चूनेवाले की सीढ़ी और न जाने क्या–क्या होली की भेंट चढ़ा दिया।

शिक्षण–संकेत : *कक्षा में होली के हुड़दंग पर चर्चा करें। बच्चों से पूछें कि वे उस दिन क्या–क्या करतब करते हैं। इनसे कुछ लोगों को प्रसन्नता होती होगी तो कुछ दुखी भी होते होंगे। उनसे पूछिए कि लोगों को दुख पहुँचाकर खुश होना अच्छी बात है क्या ? हम किसी की वस्तु को लाकर होली में जला देते हैं और खुश होते हैं लेकिन जब अपनी वस्तु इस तरह चोरी की जाने के बाद राख हो जाती है तो हमें दुख होता है। ऐसे कामों का परिणाम सोचकर ही काम किए जाएँ।*

आखिर होली जलने का समय भी आ गया। होली–दहन आरंभ हुआ और देखते–ही–देखते झाड़ का पहाड़ धू–धूकर जलने लगा। टूटे टीन के कनस्तर का ढोल बजा, मंडली के बदन में थिरकन हुई और फिर जो हुड़दंग शुरू हुआ, तो रात के बारह बजे जाकर रुका।

घर पहुँचकर मैंने देखा कि सब लोग परेशान बैठे हैं। माँ और पिता जी के चेहरों पर गुस्से और परेशानी के भाव हैं। मैंने सोचा, आज तो मेरी खैर नहीं। डरते–डरते जैसे ही घर में कदम रखा कि पिता जी की सख्त आवाज सुनाई दी,''क्यों रे! तेरी चारपाई कहाँ है ?''

''मेरी चारपाई ?'' मैंने चौंककर कहा। ''हाँ, हमने सारा घर देख लिया। कहीं नहीं मिली। कहाँ रखी थी निकालकर ?'' माँ ने पूछा।

मुझे काटो तो खून नहीं। अब से कुछ देर पहले की सारी मस्ती उतर गई। हुड़दंग का रंग फीका पड़ गया। टूटे हुए कनस्तर की ठक्–ठक् कानों में गूँजने लगी।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, मगर तभी मुझे ध्यान आया कि हमारी मंडली के जो छोकरे इस तरफ आए थे, उनमें बिल्लू भी था और उन दिनों मेरी बिल्लू से कुछ खटक भी रही थी। बात साफ हो चुकी थी कि हो–न–हो यह जरूर बिल्लू का ही काम है।

खैर, जैसे–तैसे मन को समझाया कि अब जो होना था, सो हो गया। मगर उस रात तो मुझे फर्श पर दरी बिछाकर ही सोना पड़ा। अब भी जब–जब होली आती है, मैं अपनी चारपाई को जरूर याद कर लेता हूँ।

शब्दार्थ

शरारती	–	शरारत करनेवाला
हुड़दंग	–	उपद्रव
अभियान	–	किसी विशेष कार्य के लिए योजना बनाकर उस पर कार्य करना।
कनस्तर	–	खाली पीपा
होली दहन	–	होली जलना/होली जलाना
खटकना	–	बुरा लगना, अनबन होना
थिरकन	–	ठुमक–ठुमककर चलना, नाचते हुए चलना।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 होली के झाड़ को पहाड़ जैसा ऊँचा बनाने के लिए बच्चों को क्या करना पडा ?

प्रश्न 2 होली के लिए कहाँ–कहाँ से सामान लाया गया ?

प्रश्न 3 होली के लिए सामान उठाने में किन लोगों का विशेष ध्यान रखा गया ?

प्रश्न 4 कहानी के नायक को होली–दहन की रात फर्श पर ही दरी बिछाकर क्यों सोना पड़ा?

प्रश्न 5 माँ और पिता जी के चेहरे पर गुस्से और परेशानी के भाव क्यों थे ?

प्रश्न 6 बच्चों की टोली ने लोगों के घरों से होली जलाने के लिए जो सामान उठाया, क्या तुम्हारी दृष्टि में यह काम उचित था ? क्यों?

प्रश्न 7 होली पर लोग हुड़दंग मचाते हैं, दूसरों को परेशान भी करते हैं। तुमने किस तरह से होली मनाई ? क्या तुम हुड़दंग मचाना उचित समझते हो ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक पाठ में से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख बच्चों को लिखाएँ। पुस्तक में से शब्द देखकर तथा अनुच्छेद देखकर बच्चों को इसकी जाँच करने को कहें।

प्रश्न 1 दुख और शोक की अवस्था में लोगों के मुँह से 'हाय' शब्द निकलता है। इसी प्रकार निम्नलिखित अवसरों पर हमारे मुँह से कौन से शब्द निकलते हैं –

प्रसन्नता में / आश्चर्य में /उत्साह में /चिन्ता में ।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. काटो तो खून नहीं ख. रंग फीका पड़ जाना

ग. झाड़ का पहाड़ बन जाना घ. भेंट चढ़ा देना।

प्रश्न 3 नीचे दिए गए शब्दों/शब्द–समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

मौज–मस्ती, आसपास, डरते–डरते, देखते–ही–देखते, मंडली, परेशान, शरारत, चौंककर, नेतृत्व।

प्रश्न 4 नीचे लिखे वाक्यों को सही करके पुनः लिखो।

क. रिमझिम–रिमझिम पानी की बूंद बरस रहा है।

ख. हर टुकड़ा में तीन–चार लड़के था।

ग. हर वर्ष का तरह होली आया।

घ़ उन दिनों मेरा बिल्लू से खटक रहा था।

ङ. लड़कियाँ हंस रहे हैं।

- नीचे लिखे वाक्य को पढ़ो।

  ''राम ने रावण को मारा''।

  इस वाक्य में 'ने' शब्द राम व रावण को जोड़ने का काम कर रहा है। 'को' शब्द रावण व मारा को जोड़ने का काम कर रहा है।

प्रश्न 5 'ने' और 'को' का प्रयोग करते हुए दो वाक्य बनाकर लिखो।

- शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके शब्दों के लिंग के बारे में पता किया जा सकता है, जैसे भैंस काली होती है। कौआ काला होता है। काला, काली; होता है, होती है शब्दों से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की जानकारी हो सकती है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित शब्दों में जो स्त्रीलिंग हैं उन्हें स्त्रीलिंग के वर्ग में और जो पुल्लिंग हैं उन्हें पुल्लिंग वर्ग में लिखो :

घुँघरू, भैंस, बोतल, पोशाक, हिरन, वेदना, घटना, पीपल, घी, सुपारी, चपाती, दाँत, अरहर, चारपाई, होली, रंग, कनस्तर, पहाड़, झाड़, मंडली, पहाड़ी।

रचना

- होली शांति और सद्भावना के साथ मनाया जानेवाला एक पवित्र त्योहार है। इस दिन लोगों को कीचड़ लगाना, गाली–गलौज करना, देर रात तक नगाड़े बजाकर बुजुर्गों और बच्चों को परेशान करना क्या ठीक है ? अब की बार तुम अपने मुहल्ले में होली का त्यौहार किस तरह शालीनता से मनाओगे, आठ वाक्यों में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते/कागज से होली में पहननेवाली झालरदार टोपी और मुखैटा बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पता करो हम होली का त्यौहार क्यों मनाते हैं?
- निम्न बिन्दुओं के आधार पर होली त्यौहार का वर्णन करो–

4MPS76

1. कब मनाया जाता है।
2. क्यों मनाया जाता है।
3. कैसे मनाया जाता है।
4. होली त्यौहार का क्या महत्व है।
5. होली त्यौहार मनाते समय क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

पाठ 20

अमीर खुसरो की पहेलियाँ

4WYN8T

पहेलियाँ बूझने–बुझाने का खेल बच्चे खेलते ही रहते हैं। गाँव और शहर दोनों में ये पहेलियाँ खूब प्रचलित हैं। लेकिन यह कहना कठिन है कि इनमें से कौन–सी पहेली किसने रची है। हाँ, पहेलियाँ रचने के संबंध में एक नाम बहुत प्रसिद्ध है। वह है– अमीर खुसरो। अमीर खुसरो और उनकी पहेलियों के संबंध में इस पाठ में पढ़ेंगे।

आज से लगभग 700 वर्ष पहले भारत में गुलाम वंश का एक बादशाह था– बलबन। उसके समय में ही दिल्ली में हज़रत निजामुद्दीन औलिया नाम के एक संत थे। उनका एक आठ वर्ष का प्यारा शिष्य था– अमीर खुसरो। खुसरो बड़ा होकर अपनी बुद्धिमत्ता के बल पर बलबन का राज–दरबारी बना।

खुसरो अरबी, फारसी, तुर्की और हिंदी के विद्वान् थे। उन्हें संस्कृत भाषा का भी थोड़ा ज्ञान था। उन्होंने फारसी में तो बहुत श्रेष्ठ रचनाएँ कीं; हिंदी में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। खुसरो एक अच्छे संगीतज्ञ भी थे। कहा जाता है कि सितार का आविष्कार खुसरो ने ही किया था।

खुसरो इसलिए भी प्रसिद्ध हैं कि हिन्दी की खड़ी बोली में कविता लिखनेवाले वे सर्वप्रथम कवि माने जाते हैं। यहाँ उनकी कुछ चुनी हुई पहेलियाँ दी जा रही हैं। इन्हें पढ़ो और बूझो–

(1) धूपों से वह पैदा होवे,
छाँव देख मुरझाए।
एरी सखी मैं तुझसे पूछूँ ,
हवा लगे मर जाए।।

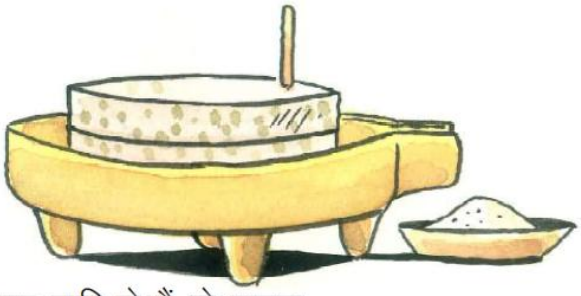

(2) एक नारि के हैं दो बालक,
दोनों एकहि रंग।
एक फिरै एक ठाढ़ा रहे,
फिर भी दोनों संग।।

शिक्षण–संकेत : *पहेलियों के संबंध में कक्षा में चर्चा करें। स्थानीय बोली की कुछ पहेलियाँ बच्चों से बूझे। उन्हें बताएँ कि यह खेल दिमाग का है। पत्र–पत्रिकाओं में पहेलियाँ प्रकाशित होती रहती हैं, उन्हें पढ़ने और बूझने के लिए प्रेरित करें। बच्चों को अपनी–अपनी बोली (भाषा) की पहेलियों का संग्रह कर बूझने के लिए भी प्रेरित करें।*

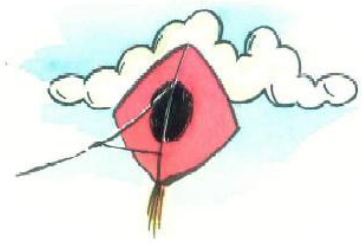

(3) आदि कटे तो सबको पाले,
मध्य कटे तो सबको मारे।
अंत कटे से सबको मीठा,
खुसरो वाको आँखों दीठा।।

(4) एक कहानी मैं कहूँ,
तू सुन ले मेरे पूत।
बिना परों वह उड़ गया,
बाँध गले में सूत।।

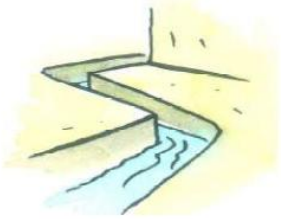

(5) सावन–भादों बहुत चलत है,
माघ–पूस में थोरी।
अमीर खुसरो यों कहे,
तू बूझ पहेली मोरी ।।

(6) बीसों का सिर काट लिया।
ना मारा ना खून किया।।

(7) जल–जल चलती बसती गाँव,
बस्ती में ना वाका ठाँव।
खुसरो ने दिया वाका नाँव,
बूझ अरथ नहिं छोड़ो गाँव।।

(8) घूम–घुमेला लहँगा पहिने,
एक पाँव से रहे खड़ी।
आठ हाथ हैं उस नारी के,
सूरत उसकी लगे परी।।

(9) एक थाल मोती से भरा,
सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे,
मोती उसका एक न गिरे।

शब्दार्थ

दीठा	–	देखना	वाका	–	उसका
नारि	–	स्त्री	नाँव	–	नाम, नाव
सूत	–	धागा	थोरी	–	थोड़ी, कम
पूत	–	पुत्र	सूरत	–	शक्ल
मध्य	–	बीच			

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 वह कौन–सी चीज है जो धूप में पैदा होती है, लेकिन हवा लगते ही मर जाती है?

प्रश्न 2 चक्की के कितने पाट होते हैं ?

प्रश्न 3 मोरी (नाली) पूस–माघ के महीनों में धीमी और कम क्यों चलती है ?

प्रश्न 4 छतरी के कितने पाँव और कितने हाथ होते हैं ?

प्रश्न 5 वह कौन–सा थाल है, जो मोतियों से भरा होता है ?

प्रश्न 6 'सूरत उसकी लगे परी' इस पहेली में परी के समान सूरत की बात कही गई है। सोचकर लिखो कि परी की सूरत में क्या खास बात रहती है ?

प्रश्न 7 छत्तीसगढ़ी में पहेली को क्या कहते हैं ? छत्तीसगढ़ी बोली की दो पहेलियाँ लिखो।

भाषातत्त्व और व्याकरण

- पाठ के शब्दों के अर्थ भी पूर्ववत् पूछे जाएँ और उनका प्रयोग कराएँ।

प्रश्न 1 इस पाठ में निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग हुआ है–

नार, छाँव, ठाढ़ा, पूत, परों, लहँगा, औंधा।

इन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करके लिखो।

4X8JAG

गतिविधि

- अपने बड़े–बुजुर्गों से पहेलियाँ एकत्रित करो और कक्षा में सुनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पंखा, किताब, शिक्षक, पानी, मोर, बादल, आदि पर पहेलियाँ बनाओ।

पाठ 21

गुड्डी तंगियोन पंड़सिया

जोक्क ख़द्दर असल ती कुकेर, एड़पा ता नलख नू तम्हैं तंगियो बगारिन पंड़सनर अरा पंड़सा बेदनर। आदगेम आरिन बढ़िया बअनर। पहें तनि–मनि काम बूता बिगड़ारई होले तंगियो बगर ही कत्थन अरा पसना–कोड़नन हूँ सहना मर्नी। आर अख़ते–अख़ते एन्देर गलती हूं माल नन्नार, पहें गलती बेगर अख़ना ती मनी काली। ई पाठ नू ओंटे कुंके ही नलखनू एन्नेम गलती मनी अरा अदगे सजा ख़खरःई। पहें आदहि तंग अज्जी काम गलती आबोन रिझ नू बदलीई चि'ई।

ओंद उल्ला गुड्डी ही एड़पा नू पाही बरउ रहचर। आरही एड़पाता काम ननू आली ही तंगदास नाड़ी मंजस केरस। आदिगे आद नलख ननागे माल बरचा। तंगअज्जी पूजा नना लगिया। तंग्यो मंडी खटआ लगिया। गुड्डी सोच्चा कि इन्ना आद तंग्योन नलख ननर की खुश नन्नोन चिओन। आद कुसमी बेसे किचरिन सइमटाचा तहाँ सोफा पेन्दा उइया चिच्चा अरा जल्दी–जल्दी एर्रार की बाल्टी नू साबुन घोलचा अरा पोंछा लगा बाचा। गुडडी अख़ा हूं बल्ला लगिया, अरा बग्गेम साबुन घोलोरना ती जम्मा कोठरी नुरदना मंज्जा केरा।

तंगअज्जी पूजा ही प्रसाद चिआगे कोठरी नू बरते बाचा। –हाय राम! ई कोठरी एकासे..... बअते–बअते, आद नुरदर'आ ती ख़तरा केरा। गुड्डी सोच'आ लगिया कि एंगअज्जी एग्हैं सफा नंजका ती सहरारोओ। मगर आद तंगअज्जीन ख़तरते ईरिया तहां आद अकबक मंजा केरा। चिच्चयारनान मेनर की तंग्यो बोंगते कुड़िया नू अड़सिया केरा, कि आद गहि रबड़ ही चप्पल नुरदरा केरा। आद तंग अज्जी मंइया ख़तरा केरा। तंग अज्जी चिच्चयारा–हाय राम!।

गुड्डी गे इबड़न एरर की मंजा बेसे लगिया। आद अलखनुम काला लगिया। तंगियो तंगन सम्बड़ाचा। खेड्ड आबोन बड़ियर ननर की इज्जा। तहां तंगअज्जीन उठा बअते सोफा नू ओकताचा। आदही ख़ोख़ा ओंद–ओंद पग सम्भड़ारनुम, गुड्डी तरा केरा अरा बाचा –बरय नीन इत्तरा बरय!

गुड्डी एड़पा ती बोंगते बाहरी उरखते बाचा–नीन लओय।

माल लओन, तंगियो बाचा गुड्डी जल्दी हेद्दे बरय। गुड्डी एलचते–एलचते तंगियो हेद्दे बरचा।

तंगियों आदही ख़ेबदन अइठाचा, ऐन्देर नंजकीन चिच्चकीन, नीन लस्सा टिडकी रअदीन एड़पाता ख़ेख़ेल नू ? जल्दी सही सही तेंगय मलते.....।

नींन एंगान माल लओय गुड्डी तग्हैं खेबदान धरचा अरा बाचा। इन्ना पहियार बरउ रअ'नर। निंग्गा बग्गे नलख नन्ना रहचा। इन्ना कुसमी हूँ माल बरचा, आदी गे एन साफ सुथरा नना लगिअन।

तंगियो ही ख़ेखाती गुड्डी ही खेबदा अम्बरा केरा, आद बाचा पहें नींन एंदेर नंजकी रअदीन?

एन साबुन सजअर की चींचकी रहचअन एकन्ने कुसमी लगाबाई। आद फिनाइलती लगा ब'आ लगिया। अत्तुक च'ऑलगिया। अदिगे एन किचरी नोड़ना साबुन सज्जकी रहच'अन, बस आधा डब्बा दीम सज्जकी रहच'अन।

हे धर्मे ! गुड्डी नीन एंदेर नंजकी रअदीन ? कलै! अक्कु बाहरी बेचय। एका बारी एन मल मेख़ोन एड़पा अमके बरा, बुझुरकीन! तंगियो बाचा। गुड्डीद अनैत खुसमारा। तंगियो तानिम बाचा बहरी बेचय वाह! गुड्डीद सोच्चा, साफ सफाईगा मंजा केरा। अक्कुन पूंपन सरियादत। एड़पा ही ख़ोख़ा तरा लड़ंग नू जंबु रंग ही पूंप पूइदकी रहचा और झींगा ही लड़ग नू बालका ख़ोर पूंप। गुड्डीद नगदे बग्गे पूंप तुखिया अरा फ्रांक नू धर'अर की एड़पाता पिन्डा गूटी अड़सकी रहचा, आद ईरिया कि पिन्डा साबुन ही बोट्टो ती निंदकी र'ई। गुड्डीद तंगियो एरते बाचा, नींन साबुन ही बोट्टो एंदेर गे कम'आ लगदीन।

नीन एका साबुन ही बोटटोन ओरमा तरा बींडचिकी रहचकीन आदिम एन नोड़ा लगेन। ई झोला नू एंदरा नींदकी र'ई। तंगियो साबुन ही बोटटोन नोड़ते मेंजा। पूंपदगा अक्कु नंम्हैं हेद्दे, मल्लम पूंइदई, नेखय एडपा ती तुखकीन ओदरकीन कुके।

एन एड़पा चोल्ला ता बटगी ता लड़ंगती बालका ख़ोर पूंप तोंखकी रऐन अरा नन्ना लड़ंगती जम्बु रंग ही पूंप बिद्दकी रऐन–गुड्डी रिझरनुम बाचा।

अक्कुन तंगियो सह'आ पोलना बेसे मंजा केरा। गुडडीन धर'अर की एड़पा भीतरी होच्चा अरा बाचा अक्कुन निंग्न लओन। इन्ने बग्गे झींगा अरा सेम्बी पूंपन तुख़कीन ओंदरकीन ? बेवकूप निग्हैं। आगु एड़पा नू साबुन ही बोट्टो दिम बोट्टो नजकीन चिचकीन। इदीगे एन एदेर हूँ माल बाच'अन, एंदेरगे की नींन ख़द्द हिकदीन। पहें ई अमख़ी ही पूंप! तंगियो कैर ती एँड़ थपड़ा लवचा चिच्चा।

गुड्डीद चिच्चयार–चिच्चयार चींख़ा हेल्लरा। आद उर्मी उल्ला मार खख़रकाती जोर से चिच्चयार–चिच्चयार जिंयान ती चींखीं। आद अक्ख़आ लगिया कि तंगअज्जी अदिन बछाबआगे बरओ।

मंजा हूँ एदीम, तंगअज्जी कटिक आगु गुड्डी ही सफाई नंजकाहीकरने खतरकी रहचा अरा नुंजना ती सुसतार'आ लगिया। आदही चींख़नान मेनर की आदगे माल सहारा । एकअम बेसे भीतन धरअर की धीरे–धीरे बरचा अरा बाचा ख़ई गुडडीन एंदेरगे ल'आ लगदीन ? तंग अज्जी ही बअनान मेन्नर की गुड्डी जोर–जोर से चींख़ा हेल्लरा।

पैरीता नाटक आबोन नीन एरकी रहचकी। ओंद घन्टा नू साबुन ही बोट्टोन सफा ननाउंगइयन। ड्रमता जम्मा अम्म मुन्जरा केरा। साबुन बोट्टो माल मुजरकी रहचा कि एड़पा चोल्ला, ता बटगी ती झींगा अरा सेम्बी ही उर्मी पूंपन तुख़िया ती ओंन्दरा। लाड़ो, सिगर'आ गे। नींन एदही तरा अमय मनय अयंग, तंगियो कैरती बाचा।

तंगअज्जी गुडडी हेददे बरचा, पूंपन एंदेरगे तुख़किन बिटी, इबड़ा पूंपती माल सिंगरारनाय।

गुड्डी चींख़ते –चीख़ते बाचा कि और पूंपद एड़पा हेद्दे माल कुंदी होले एन सोचअन ई पूंपन दीम लगाबओन।

अमय चींख़य बेटी, अज्जी तंग नत्तीन भंन्दचा अरा तंग सेड़ोन बाचा–कोई बात मला ख़ई झींगा ही पूंप ती एन पकोड़ी कमओन अरा सेम्बी पूंप ती रायता। र'आ चि'ई ख़द्दो ती गलती मंजा केरा। छोटे दीम गा रई, आद गा निंगन पंडसा लगिया। एन असकटरकी रहच'अन इदही पंड़सना ती, तंगियो जंगारा ती बाचा।

तंगअज्जी मंडी खटना एड़पानू कालर की सेम्बी पूंप ती रायता कमचा। अरा झींगा पूंप ती कुरकुरे पकोड़ी। गुडडी गे तंग अज्जी कले–कले पकोड़ीन कागज नू लटिमाचा ती मोखागे चिच्चा।

बक्क गहि मानें

नुरदरना–नुरदर की खतरना। इलिचका लज्जे–जिया भीतरी ती एलचना। पक्ष हो'अना–आसतरा मनना। सुधरा'अना– ठीक नन्ना। पाठ बचना– विषय विशेष आबोन अख़ना। बुक्कान्ती चींखना–जियन्ती चींखना। गूल नन्ना– चिच्चयारना। रायता– अमचुर चटनी।

मेनता अरा हेभेरना

मेनता अख़ना

मास्टरस कक्षा आबोन एँड़ खोड़हा नू ख़ट्टर की पाठ ती मुन्धता लेखे ख़द्दारिन बारका मेनता–मेंजख़ा ननतोओस। इस्कूलियर ही खोख़ा मास्टसरस हूँ ख़द्दर ती बारका मेनता मेंदस नेक'अन। जोक्क मेनता एन्ने मना उंगी –

क. गुड्डी ही जियानू अयंग आबोन पंडसना गहि सोच ऐन्देरगे बरचा ?

ख. गुड्डी एन्देर नलख़ ननरकी तंगियोन अकबक नू उइया बिदिया ?

मेनता 1. किइय्या तूड़रका मेनता गहि मेंजखा तूड़ा–

क. साफ सुथरा ननागे गुडडीद एन्देर नंज्जा ?

ख. गुड्डी तंग अज्जी एड़पा नू एकासे खतरा केरा ?

ग. गुडडीन तंगियों ही पसना ती तन अज्जी एकासे बछाबाचा ?

घ. गुडडीद बाल्टी नू साबुन एन्देरगे घोलचा ?

ड. गुडडी ही तंगियों अरा तन अज्जी नूरदर कि एन्देगे ख़त्तर्र ?

च. कुसमी एन्दरान सजआरकी पोंछा लगा बआ लगिया ?

छ. गुडडीद सिंगरआगे एका–एका पूंपन चोक्खा ?

ज. तंगियो गुडडीन एँड़ थपड़ा एन्देरगे लौचा ?

झ. तन अज्जी रायता एन्देर चीज ती कमचकी रहचा ?

ण. झिंग्गा ही पूंप ती तन अज्जीद एन्दरा कमचकी रहचा ?

मेनता 2. ख़ीरी बचआर की तेंग्गा कि ने, नेकन बाचा–

क. बराय इत्तरा बराय नीन!

ख. नीन एंग्गन पसओय गा मला ?

ग. नीन ई साबुन ही बोटटो एन्देरगे कम'आ लगदीन ?

घ. एरय एंवदा बग्गे पूंप ओदरकी रएन ?

ड. ख़ई गुडडीन एन्देरगे पसआ लगदीन ?

च. पूंप एन्देरगे तुखकी बेटी ?

छ. आद गा निंगन पड़सा लगिया।

सोचआ अरा तूड़ा

मेनता3.**क.** गुड्डीद तग्हैं सोच ती तंगियोन पंड़सा बेद्दा लगिया। आद गहि जियानू सोच दौ रहचा। पहें एड़पान सफा नन्ना नू आद ती एन्देर गलती मंजकी रहचा।

ख. गुडडीद तग्हैं एड़पान सिंगर'आ बेददा लगिया। पहें ई नलख नन्ना नू आदती गलती मंजा। आद एन्देर गलती रहचा ?

ग. अगर नीन गुडडी ही अड्डा नू रहचका होले। एकासे निग्हैं अयंग आबोन पंड़सोय दने।

घ. गोर–गोरा गुड्डीद ओन्टेगा तंगियो ही नलख नू पंड़सिया पहें आदगे तंगियो ती केबेर मोखरना अरा मार सहना मंजा। एंदेर गुड्डीन केबरना अरा ल'अना पसना दव रहचा ?

ड. गुड्डी ही चोक्का सेम्बी अरा झींगा ही पूंपती तंग अज्जी एम्बा अमख़ी कमचा। सोचअर की तूड़ा कि गुडडीद आद ही पइत्त नू तंगियोन एंदेर बाचा मनो ?

कत्था–बचना अरा कत्थअइन

इसन नाम सिखिरो'ओत– ठमकारना चिन्ह ही बेहवार।

कक्षाता ओरोत खद्दस पाठ नू बरचका बक्क अबोन श्रुतिलेख ही रूप नू बओस। अरा बछरका ख़द्दर तूड़ोर। ख़ोखानू मास्टरस ही तिंक्का लेक्खा एक दूसरर ही हेभेरना कापीन अदला–बदली ननर की आदहि जॉच ननोर।

– ई बरन ही एँड़ो ख़ोड़हातर संग्हेम बक्क गहि मानें अरा बकपून बेहवार नू ओंदोर'ओर।

– ध्यान ती बच'आ अरा दौ फुरचाआ–

बरचा– बरचर, लवचा– लवचर, चिच्चयारा– चिच्चयारर, ननो– ननोर।

मेनता 1. किइय्या तूड़का, बई–चखना गहि मानें तूड़ा अरा अदिन बकपून नू बेहवार नना।

अनैत रिझरना, जियनती चींखना, कत्था उइना, लूरन धरचा, दुखे चि'अना।

मेनता 2. किइय्या तूड़रका बक्क आबोन दौ ननर की तूड़ा–

चोला तरता, सहआ ओगना, पूंप बगिचा, कलेकल, समड़ाना, पकाड़ी, एने।

मेनता 3. किइय्या तूड़का धाइर नू ठमरका चिन्हा एसन –एसन लग्गो बेहवार नना–

अमय चींखय बेटी! तंग अज्जी गुडडीन भंदचा। अरा तंग सेड़ोन आनिया एंदेर कत्था हूँ मल्ला ख़'ई। झींगा पूंपती एन पकोड़ी कम'ओन चि'ओन, अरा सिम्बी पूंपती रायता, अब खद्द ती गलती मंजा, केरा, काला चि'आ। सन्नी हूँ गा र'ई । आद गा निंगन पंड़सा लगिया।

कत्थ–टूड़

तंग'आ एड़पा नू इन्द्रिइम परब बेड़ा नू नीम निम्हैं अयंग–बंगर गहि नलख़ नू एकासे पंड़सोर। ई पत नू दोय बकपून तूड़ा।

नीम–तंग'आ एड़पन दौले उइयागे एंदेर–एंदेर नन्दर। दोय बकपून नू तूड़ा।

बेहवार ननत'आना–

बचना–तूड़ना, बेचना–तोकना ही ख़ोख़ा हूँ खद्दरगे कटिक बेड़ा ख़ख़री'ई, रोजेम अयंग –बंगर गहि नलख़ नू आर गहि नलख़न पंड़सागे बेड़ान ख़टटा अरा नना।

एड़पा गुसन पूंप बटगी गे अड्डा र'ई, होले पूंप ही ख़ोप्पा इद'आ अरा अदिन एरा ख़ोजा।

जोगे–बढ़हाब'अना

नाम तंग'आ–तंग'आ एड़पा नू अयंग–बंगर गहि नलख नू एकासे पंड़सा ओंगोत अदिन ओक्कर की कच्छनख़र आ।

REHQCZ

पाठ 22

किताबें

किताबें हमारी सबसे गहरी मित्र हैं। किताबों से ही ज्ञान का प्रसार होता है। किताबें बिना किसी भेदभाव के सभी तक ज्ञान पहुँचाती हैं। किताबों से ही हमें पुरानी बातों की जानकारी मलती है। किसी देश के उत्थान–पतन की जानकारी भी किताबों से ही मिलती है। किताबों ने बहुत–से लोगों का जीवन बदल डाला है। हमें ऐसी किताबें पढ़नी चाहिए जो हमें प्रगति–पथ पर बढ़ने में प्रोत्साहित करें। प्रस्तुत कविता में किताबों के इन्हीं गुणों का उल्लेख किया गया है।

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की,
दुनिया की, इंसानों की,
आज की, कल की,
एक–एक पल की,
खुशियों की, गमों की,
फूलों की, बमों की
प्यार की, भार की
जीत की, हार की
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?

किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
किताबों में परियों के किस्से सुनाते हैं
किताबों में रॉकेट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान का भंडार है

क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे ?
किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

शब्दार्थ

इंसान – मनुष्य साइंस – विज्ञान

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 किताबें पढ़ने से क्या लाभ है ?

प्रश्न 2 तुम्हारी लायब्रेरी में कौन–कौन सी किताबें हैं सूची बनाओ ?

प्रश्न 3 'किताबें तुम्हारे पास रहना चाहती हैं' कवि ने ऐसा क्यों कहा है ?

प्रश्न 4 किताबें प्रकृति के किन रहस्यों को खोलती हैं ?

प्रश्न 5 कवि ने किताबों के संसार को बड़ा क्यों बताया है ?

प्रश्न 6 तुम किताबों के संसार में जाना चाहोगे या नहीं? कारण बताते हुए इस प्रश्न का उत्तर लिखो।

प्रश्न 7 नीचे लिखी पंक्तियों को पूरा करो–

क. किताबों में चिड़ियाँ .....।
ख. किताबों में ज्ञान की .....।
ग. किताबें कुछ .....।
घ. किताबों में साइंस .....।

प्रश्न 8 तुमने कुछ किताबें अवश्य पढ़ी होंगी। उनमें से तुम्हें सबसे अच्छी किताब कौन–सी लगी ? उस किताब की कुछ अच्छी बातें लिखो।

प्रश्न 9 तुम्हें अपनी कक्षा की कौन–सी किताब सबसे कठिन लगती है और क्यों ?

प्रश्न 10 तुम अपनी किताबों में कैसी बातें पढ़ना पसंद करोगे ? क्या वे बातें तुम्हारी किताबों में हैं ? उदाहरण देकर लिखो।

भाषातत्व और व्याकरण

प्रश्न 1 इन शब्दों की जोड़ियाँ बनाओ–

चिड़ियाँ	लहलहाते हैं
खेत	सुनाते हैं
झरने	चहचहाती हैं
किस्से	गुनगुनाते हैं

प्रश्न 2 रिक्त स्थानों में सही शब्द सोचकर लिखो।

जैसे	किताबों के पन्ने.	फूलों की .....
	पेड़ों के	सागर की .....
	आकाश के	हिमालय की .....
	वर्षा की	चिड़ियों की .....

प्रश्न 3 निम्नलिखित विदेशी शब्दों की हिन्दी शब्दों के साथ सही जोड़ियाँ मिलाओ–

किताबें	रहस्य
ज़माना	प्रसन्नता
राज़	दुख
खुशी	पुस्तकें
ग़म	कथा
किस्सा	युग

प्रश्न 4 निम्नलिखित समान उच्चारणवाले शब्दों को पढ़ो और वैसे ही दो–दो शब्द लिखो–

मार, हार, ..., ... जीत, मीत, ..., ...

कल, पल, ..., ... झरना, भरना, ..., ...

प्रश्न 5 'हार' शब्द के अक्षरों को अगर हम उलटकर रखें तो 'रहा' शब्द बनता है, जो सार्थक शब्द है। ऐसे चार शब्द (दो–दो अक्षरवाले) सोचकर लिखो जिनके अक्षर अगर उलटकर रखे जाएँ तो वे सार्थक शब्द बनेंगे।

रचना

- अपनी पसंद की पुस्तक के बारे में आठ वाक्य लिखो।

योग्यता–विस्तार

- पुस्तकालय से कहानी, कविता की पुस्तकें लेकर पढ़ो।
- कोई एक कहानी पढ़कर कक्षा में सुनाओ।
- किसी समाचार पत्र या पत्रिका में छपी कहानी को पढ़कर कक्षा में सुनाओ।

4YA3H2

पाठ 23

डॉ. जगदीश चन्द्र बोस

भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने अलौकिक आविष्कारों और अनुसंधानों से संसार को चमत्कृत किया है। डॉ. रमन, डॉ. श्रीनिवास रामानुजन की खोजों की ही तरह डॉ. जगदीश चन्द्र बोस की वनस्पतियों के संबंध में की गई खोज से संसार चमत्कृत हुआ। वृक्षों में भी जीवन होता है, यह तथ्य डॉ. बोस ने दुनिया को बताया। इस पाठ में हम डॉ. बोस का संक्षिप्त जीवन–परिचय और उनकी खोजों के संबंध में पढ़ेंगे।

सूर्य अस्त हो रहा था। चिड़ियाँ चहकती हुईं अपने–अपने घोंसलों में लौट रही थीं। ठंडक बढ़ती जा रही थी। गरम स्वेटर, मोजे, हॉफ पैण्ट पहने, हाथ में एक बेंत लिए विक्की अपने घर के बगीचे में टहल रहा था। वह कभी किसी पेड़ पर अपना बेंत जमा देता, कभी किसी फूलदार पौधे को झकझोर देता। उसके दादा जी बरामदे में बैठे चाय का घूँट ले रहे थे । उनकी दृष्टि विक्की की ओर ही थी। उसे पेड़–पौधों में उलझा देखकर वे बोले, ''विक्की, अब इधर आ जाओ। पौधों को मत छेड़ो। यह उनके आराम करने का समय है । ''

विक्की ने कहा, '' वाह दादा जी! आपने खूब कहा। मानो पेड़–पौधे भी सचमुच आराम करते हैं, सोते हैं।''

''हाँ, वे सचमुच आराम करते हैं, रात को सोते भी हैं और प्रातः जाग जाते हैं'', दादा जी ने विक्की को समझाया।

''दादा जी, यह आपने नई बात बताई। भला पेड़–पौधे भी कहीं सोते हैं! आपने कैसे जाना कि पेड़–पौधे सोते हैं ? वे तो रात को भी हिलते–डुलते रहते हैं। सोनेवाला आदमी तो हिलता–डुलता नहीं।''

''अच्छा, यहाँ आओ। मैं तुम्हें इसकी कहानी सुनाता हूँ''– दादा जी ने विक्की से कहा।

विक्की को कहानी सुनने का बड़ा शौक था। वह तुरंत आकर दादा जी की गोद में बैठ गया।

''अब सुनाइए कहानी–'' वह दादा जी से बोला ।

शिक्षण–संकेत : *पेड़–पौधों के संबंध में चर्चा कीजिए। पेड़–पौधे मानव की तरह पैदा होते हैं, बढ़ते हैं, मरते हैं। उन पर भी सर्दी, गर्मी का प्रभाव पड़ता है। तोड़ने या काटने पर उन्हें भी पीड़ा होती है। कभी ऐसी बातें कल्पना की उड़ान मानी जाती थीं, बाद में भारतीय वैज्ञानिक डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने अपने अनुसंधान से इन बातों को सत्य कर दिखाया। कक्षा में इन बातों की चर्चा करें।*

दादा जी ने चाय का प्याला रख दिया। वे एक हाथ से उसकी पीठ सहलाते हुए कहानी कहने लगे। ''उस समय अपना देश बहुत बड़ा था। तब बांग्लादेश भी भारत का भाग हुआ करता था। बांग्लादेश की राजधानी ढाका है। ढाका के पास एक गाँव है, राढ़ीरवाल। वहाँ एक डिप्टी कलेक्टर के घर एक बालक का जन्म हुआ। उसका नाम रखा गया जगदीश चंद्र। जगदीश की पाठशाला में किसानों के बच्चे खेती–बाड़ी और पेड़–पौधों के बारे में अकसर बातें करते रहते थे। इस कारण बचपन में ही जगदीश चंद्र की रुचि पेड़–पौधों में हो गई। ''

''बचपन में जगदीश ने देखा कि छुईमुई नाम के पौधे की पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हैं और थोड़ी देर के बाद वे पुनः खिल जाती हैं। सूरजमुखी नाम के पौधे के फूल का मुँह सदैव सूरज के सामने होता है। इस बालक ने बड़े होकर पेड़–पौधों पर बहुत–से प्रयोग करके यह सिद्ध कर दिया था कि पेड़–पौधे भी हम सबकी तरह सोते, जागते हैं। उन्हें भी भोजन और पानी चाहिए। वे भी सुखी और दुखी होते हैं। वे भी रोते हैं।''

''दादा जी, आप तो जगदीश चंद्र बोस के बारे में पूरी बातें बताइए।'' विक्की ने मचलते हुए कहा।

''अच्छा, तो सुनो। जगदीश चंद्र जब छोटे थे तो रोते बहुत थे– तुम्हारी तरह।'', दादा जी ने हँसते हुए कहा।

''मैं कहाँ रोता हूँ।''– विक्की बोला।

''तुम्हें क्या पता ? तुम तो तब बहुत छोटे थे। खैर! उसके माता–पिता ने उसके लिए एक तरकीब सोची। रात में जैसे ही वे रोना शुरू करते, वैसे ही ग्रामोफोन पर कोई गाना बजा दिया जाता था। गाना सुनते ही बालक जगदीश का रोना बंद हो जाता था और वह सो जाता था। जगदीश चंद्र की प्रारंभिक शिक्षा गाँव में ही हुई। पाठशाला के आसपास खूब पेड़–पौधे थे। बालक जगदीश का उनसे खूब लगाव हो गया था। गाँव की पढ़ाई पूरी होने पर जगदीश को आगे की शिक्षा के लिए कोलकाता भेज दिया गया। वे पढ़ने में बहुत होशियार थे, जैसे तुम हो।'' विक्की यह सुनकर बहुत खुश हो गया। ''फिर क्या हुआ?''– उसने पूछा ।

''जब कोलकाता में उसने पढ़ाई पूरी कर ली, उसे आगे की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड भेजा गया। वहाँ पढ़ते हुए उसका सम्पर्क बड़े–बड़े वैज्ञानिकों से हुआ।''

''फिर क्या वे वहीं रहने लगे?'' विक्की ने पूछा।

''नहीं, वहाँ की पढ़ाई पूरी करके वे वापस कोलकाता आ गए और वहाँ के प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बन गए। बड़ी कक्षाओं को जो टीचर पढ़ाते हैं, उन्हें प्रोफेसर कहते हैं। जगदीश चंद्र अपने सिद्धांत के बड़े पक्के थे। वे गलत काम करते भी नहीं थे और गलत बात मानते भी नहीं थे। उस समय अपने देश पर अँग्रेजों का राज था। अँग्रेज भारतीयों पर तरह–तरह से अत्याचार करते थे। यह कॉलेज उन्हीं का था। उन्होंने यहाँ प्रोफेसरों के लिए दो नियम बना रखे थे।

अँग्रेज प्रोफेसरों को तो वेतन अधिक दिया जाता था, लेकिन भारतीय प्रोफेसरों को कम वेतन मिलता था। जगदीश चंद्र को यह दोहरा व्यवहार पसंद नहीं आया। उन्होंने इसका विरोध किया। कई वर्षों तक उन्होंने वेतन नहीं लिया, लेकिन पूरी ईमानदारी से अपना काम किया। अंत में कॉलेजवालों को झुकना पड़ा।''

''दादा जी, आपने यह तो बताया ही नहीं कि उन्होंने पेड़–पौधों पर क्या प्रयोग किए?''– विक्की ने पूछा।

''हाँ, वही तो बता रहा हूँ। उन्होंने अपना पूरा ध्यान पेड़–पौधों के जीवन के अध्ययन पर लगा दिया। उन्होंने इसके लिए कई यंत्र बनाए। इन यंत्रों की सहायता से उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है। उन्हें भी हमारी तरह खाना चाहिए, वायु और सूर्य का प्रकाश चाहिए। उन पर भी गर्मी और सर्दी का प्रभाव पड़ता है। उन्हें भी सुख और दुःख होता है। आदमी और पशु–पक्षियों की तरह वे भी मरते हैं।''

जगदीश चंद्र बोस द्वारा की गई खोजें संसार भर की प्रसिद्ध पत्रिकाओं में छपीं। लोगों को जब इसकी जानकारी मिली तो दुनिया भर में हड़कंप मच गया। कुछ वैज्ञानिकों को उनकी खोज पर विश्वास नहीं हुआ। उन्हें फ्रांस बुलाया गया और वहाँ अपने प्रयोग सिद्ध करने के लिए कहा गया। उन्होंने कहा, ''जहर खाने से आदमी मर जाता है। यदि किसी पौधे पर जहर डाला जाए तो वह भी मुरझा जाएगा।''

तुरंत वहाँ जहर मँगाया गया। वह जहर एक पौधे पर डाला गया तो उस पौधे पर कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ा। डॉ. जगदीश चंद्र बोस को तो अपने प्रयोग पर पूरा विश्वास था। उन्होंने कहा, ''यदि यह जहर पौधे पर कोई प्रभाव नहीं डाल सका तो मेरे ऊपर भी नहीं डाल सकेगा।'' यह कहकर उन्होंने बचा जहर स्वयं पी लिया। सचमुच उन पर कोई प्रभाव नहीं हुआ क्योंकि वह जहर था ही नहीं। यूरोप के कुछ वैज्ञानिकों ने उन्हें नीचा दिखाने के लिए यह षड्यंत्र रचा था। वे सब बहुत लज्जित हुए।

''डॉ. जगदीश चंद्र बोस सही अर्थों में एक वैज्ञानिक थे। विज्ञान के प्रचार–प्रसार के लिए उन्होंने 'बसु विज्ञान मंदिर' नामक एक संस्था की स्थापना की। उन्होंने अपने प्रयोगों से अपने देश का नाम रोशन किया। अब तो तुम्हें विश्वास हो गया कि पेड़–पौधों में भी जीवन होता है।''

''हाँ, दादा जी, अब मैं जान गया। अब मैं किसी पेड़–पौधे को नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।''

शब्दार्थ

जमा देना	–	व्यवस्थित करना	सदैव	–	हमेशा
प्रारंभिक	–	शुरू का, सबसे पहला	वायु	–	हवा
संपर्क	–	मेल–मिलाप	टीचर	–	शिक्षक
वेतन	–	तनख्वाह			

नीचा दिखाना	–	लज्जित करना
नाम रोशन करना	–	प्रसिद्ध करना
स्थापना	–	खड़ा करना, जमाना, नया कार्य प्रारंभ करना
प्रोफेसर	–	कॉलेज में पढ़ानेवाला अनुभवी शिक्षक
वैज्ञानिक	–	विज्ञान का ज्ञान रखनेवाला

टिप्पणी

बांग्लादेश– 15 अगस्त 1947 को भारत के दो टुकड़े हुए, भारत और पाकिस्तान। पाकिस्तान पूर्व में बंगाल का क्षेत्र और उत्तर में पंजाब का क्षेत्र काटकर बना। जब वहाँ अगले चुनाव हुए तो पूर्वी बंगाल के श्री मुजीबुर्रहमान बहुमत से जीते। इसलिए उन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहिए था, लेकिन नहीं बनाया गया। इस पर वहाँ जबर्दस्त विद्रोह हुआ। भारत ने भी उन्हें सहायता दी। पूर्वी बंगाल पाकिस्तान से अलग हो गया। उसका नाम बांग्लादेश पड़ा। अब वह अलग स्वतंत्र राष्ट्र है।

छुईमुई– एक झाड़ीनुमा पौधा। इस पौधे की विशेषता यह है कि इसकी पत्तियाँ हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हैं और थोड़ी देर बाद पूर्व की भाँति खिल जाती हैं।

ग्रामोफोन–एक वाद्य–यंत्र जिससे रिकार्ड बजाया जाता है।

पेरिस– यूरोप में फ्रांस नाम का एक प्रसिद्ध देश है। पेरिस उसकी राजधानी है।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 सूरजमुखी की क्या विशेषता है ?

प्रश्न 2 बालक जगदीश को रोने से चुप करने के लिए उनके माता–पिता ने क्या तरकीब निकाली ?

प्रश्न 3 जगदीश चंद्र बोस ने अपनी उच्च शिक्षा कहाँ प्राप्त की ?

प्रश्न 4 ''जगदीश चंद्र बोस बड़े स्वाभिमानी थे'' इस कथन को तुम उनके जीवन के किस प्रसंग से सिद्ध करोगे ?

प्रश्न 5 नीचे लिखे कथनों में से सही कथन के लिए सत्य और गलत कथन के लिए असत्य लिखो।

क. जगदीश चंद्र बोस की प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद में हुई।

ख. जगदीश चंद्र बोस का जन्म कोलकाता के पास एक गाँव में हुआ था।

ग. बचपन से ही जीव–जंतुओं में जगदीश चंद्र बोस की रुचि थी।

घ. जगदीश चंद्र बोस एक स्वाभिमानी वैज्ञानिक थे।

ङ. फ्रांस के वैज्ञानिकों ने जगदीश चंद्र बोस को नीचा दिखाने के लिए एक षड्यंत्र रचा।

प्रश्न 6 डॉ. जगदीश चंद्र बोस के जीवन की निम्नलिखित घटनाओं को क्रमवार लिखो।

क. डॉ. जगदीश चंद्र बोस ने 'बसु विज्ञान मंदिर' की स्थापना की।

ख. डॉ. जगदीश चंद्र बोस को पेरिस में वहाँ के वैज्ञानिकों ने नीचा दिखाने का प्रयास किया।

ग. जगदीश चंद्र बोस प्रेसीडेंसी कॉलेज में प्रोफेसर बने।

घ. जगदीश चंद्र बोस की प्राथमिक शाला के आस–पास बहुत से पेड़–पौधे थे।

प्रश्न 7 किसी पौधे को यदि पानी न दें तो उस पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

प्रश्न 8 किसी पौधे को उखाड़ देने पर वह क्यों मुरझा जाता है?

भाषातत्व और व्याकरण

- कक्षा को दो समूहों में बाँटिए। एक समूह का कोई बच्चा पाठ में से श्रुतलेख के लिए एक अनुच्छेद बोले और शेष बच्चे लिखें। बाद में अपनी अभ्यास–पुस्तिकाएँ अदल–बदलकर लिखे हुए की जाँच पुस्तक में देखकर एक–दूसरे से करवाएँ।

समझो

- इन वाक्यों को पढ़ो और समझो।

यह आपने नई बात बताई।

पाठशाला के आसपास खूब पेड़–पौधे थे।

'नई बात' और 'खूब पेड़–पौधे' में 'नई' और 'खूब' क्रमशः 'बात' और 'पेड़–पौधे' की विशेषता बता रहे हैं। **जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं वे विशेषण और जिनकी विशेषता बताई जाती है, वे विशेष्य कहलाते हैं।**

प्रश्न 1 नीचे लिखी चीजों की विशेषता बताने वाले शब्द सोचकर लिखो –

..... हलवा ..... पेड़ ..... नमक ..... चींटी

..... पत्थर ..... कुरता ..... चश्मा ..... झंडा

पढ़ो और समझो

- पढ़ना–पढ़ाई, खोजना–खोज, झुकना–झुकाव।

पढ़ना, खोजना, झुकना क्रियाएँ हैं। इनसे भाववाचक संज्ञाएँ बनी हैं पढ़ाई, खोज और झुकाव।

प्रश्न 2 निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ :

हँसना, बोलना, चलना, कूदना, लिखना।

प्रश्न 3 नीचे लिखे शब्दों को शुद्ध करके लिखो–

विग्यान, विज्ञानिक, देहाँत, प्रारंभीक, परणाम, सुरजमूखी।

समझो

- तुम पढ़ चुके हो कि 'बुद्ध' को हम 'बुद्‌ध' भी लिख सकते हैं। 'विद्या' को हम 'विद्‌या' भी लिख सकते हैं।

प्रश्न 4 अब इन शब्दों को दूसरे प्रकार से लिखो।

विरुद्ध, विद्यालय, सिद्धान्त, विद्वान, चिह्न।

प्रश्न 5 'धोखा' शब्द में 'बाज' जोड़कर 'धोखेबाज' शब्द बना है। नीचे इसी प्रकार के कुछ शब्दों में दिए गए शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाओ और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

लकड़ी + हारा, भारत + ईय, प्रारंभ + इक, ईमान + दार, घूमना + अक्कड़ ।

रचना

- डॉ. जगदीश चंद्र बोस के अलावा भारत में और भी अनेक वैज्ञानिक हुए हैं। किन्हीं दो के संबंध में पाँच–पाँच वाक्य लिखो।

गतिविधि

- अपने विद्यालय के बगीचे में या अन्यत्र सूरजमुखी का पौधा देखो। क्या इसके फूल का मुँह सदा सूर्य की ओर रहता है ?
- जैसे हमारे जीवन के लिए सूर्य की रोशनी और वायु आवश्यक है, उसी प्रकार पेड़–पौधों के लिए भी सूर्य की रोशनी और वायु आवश्यक है। दो अलग–अलग पौधे लो। एक को काँच के बर्तन में बंद करके रखो और दूसरे को खुले में रखो। क्या अंतर आता है ? देखो।
- जल के बिना हम अधिक समय तक जीवित नहीं रह सकते। पौधे भी जल के बिना जीवित नहीं रह सकते। दो पौधे लो। एक को रोज पानी से सींचो, दूसरे में पानी मत डालो। दोनों में क्या अंतर आता है ? देखो।

4YSUKC

पाठ 24

इंसाफ

तुम लोगों ने वह तस्वीर देखी होगी जिसमें न्यायाधीश को आँखों पर पट्टी बाँधकर तराजू लिए हुए चित्रित किया गया है। तराजू के दोनों पलड़े सम पर रहते हैं। इसका अर्थ यह है कि न्यायाधीश की दृष्टि में सब बराबर रहते हैं; इसीलिए उसका न्याय निष्पक्ष रहता है। इस एकांकी में ऐसे ही न्याय का वर्णन किया गया है।

पात्र

अली – बगदाद का एक नाई

हसन – बगदाद का एक लकड़हारा

खलीफा – बगदाद का सम्राट

नौकर

पहला दृश्य

(स्थान– बगदाद की एक सड़क पर अली नाई की दुकान। समय–दोपहर। अली नाई अपनी दुकान पर बैठा अपना उस्तरा पैना कर रहा है। अपने गधे पर लकड़ी लादे लकड़हारे हसन का प्रवेश।)

हसन – लकड़ी ले लो, लकड़ी। अच्छी सूखी लकड़ी ले लो।

अली – ओ लकड़हारे ! अरे भाई लकड़हारे, इधर आना।

हसन – (अपने गधे को रोककर अली के पास आता है।) भाई साहब, क्या आपने ही मुझे आवाज लगाई थी ? क्या आपको लकड़ी चाहिए ?

अली – हाँ भाई, बुलाया तो इसीलिए है। लकड़ियाँ सूखी हैं ? गीली तो नहीं हैं ?

हसन – अजी साहब, आप खुद देख लीजिए। ऐसी सूखी और ऐसी अच्छी लकड़ी किसी के पास नहीं मिलेगी।

शिक्षण–संकेत : *न्याय की दृष्टि में सब बराबर होते हैं– कोई छोटा, कोई बड़ा नहीं। अपराध करने पर न्याय न तो अधिकारी को क्षमा करता है और न कर्मचारी को। न्यायाधीश की दृष्टि समान रहती है। वह छोटे–बड़े का भेद नहीं करता। इस पाठ में यही दर्शाया गया है। बालसभा में इस एकांकी का मंचन कराएँ।*

अली – ठीक है, मैं तुम्हारी बात का भरोसा किए लेता हूँ। इस गधे पर लदी सारी लकड़ियों का कितना दाम चाहिए ?

हसन – सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल है।

अली – पाँच शकाल! हैं तो ज्यादा, पर चलो मुझे मंजूर है। गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल तुम्हें मिलेगा। उतारो लकड़ी।

हसन – ठीक है। मैं अभी लकड़ियाँ उतारता हूँ।

(हसन गधे पर से लकड़ियाँ उतारकर दुकान के पास ढेर लगा देता है।)

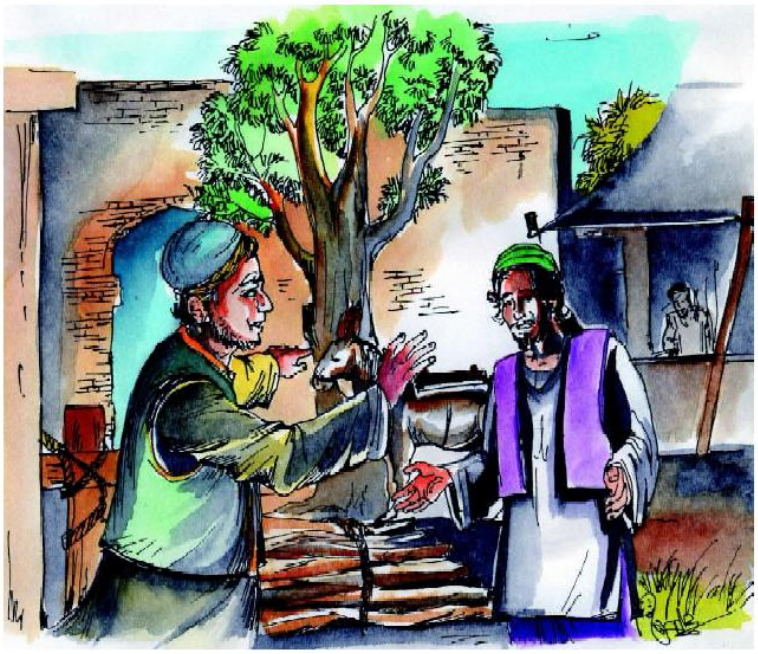

हसन – लीजिए, मैंने सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं। अब आप दाम चुका दीजिए।

अली – तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न ?

हसन – जी हाँ, सब लकड़ियाँ उतार दीं। हाथ कंगन को आरसी क्या ? आप खुद देख लीजिए।

अली – ठीक है, मैं भी देख लूँ।

(दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। गधे की पीठ पर लकड़ी की बनी काठी को देखकर)

अरे, यह क्यों नहीं उतारी ? यह भी तो लकड़ी ही है।

हसन – हुजूर, यह लकड़ी की तो है, लेकिन यह गधे की काठी है, जीन है। यह जलाने के लिए थोड़े ही होती है।

अली – मियाँ लकड़हारे, जो बात तय हुई थी, उसे जरा याद कीजिए। मैंने कहा था कि गधे पर की सारी लकड़ियों का दाम पाँच शकाल होगा। यह भी तो लकड़ी की ही है। इसे भी उतारिए।

हसन – अजी साहब! क्यों गरीब आदमी के साथ ठिठोली करते हो ? मेरा और अपना समय आप क्यों बर्बाद कर रहे हैं ? मुझे दाम दीजिए जिससे मैं अपने घर जाऊँ।

अली – देखो दोस्त! यह ठिठोली और मज़ाक की बात नहीं है। जो सौदा हुआ है, उसे आप भी निबाहिए, मैं भी निबाहूँगा। जब तक यह काठी उतारकर यहाँ नहीं रखते, तब तक मैं एक शकाल भी नहीं दूँगा।

हसन – (क्रोध में भरकर) यह आप क्या कह रहे हैं ? आप तो पक्के धोखेबाज लगते हैं। क्या आज तक किसी ने काठी भी लकड़ियों के साथ बेची है ?

अली – (हाथ में एक लकड़ी उठाकर) अबे बदतमीज! तुझे बोलने का भी ढंग नहीं मालूम। मुझे गालियाँ बक रहा है। यह ले, यह ले तेरा दाम।

(अली, हसन को लकड़ी से मारता है। हसन बचता हुआ भागता है। अली गधे की पीठ से काठी उतार लेता है और अपनी दुकान पर जाकर बैठ जाता है। हसन थोड़ी देर में अपने गधे को ले जाता है।)

दूसरा दृश्य

(स्थान– खलीफा का दरबार। खलीफा एक ऊँचे सिंहासन पर बैठे हैं। आसपास सिपाही, मुंसिफ आदि बैठे हैं। दरबान आता है।)

दरबान – हुजूर! द्वार पर एक फरियादी आया है। कहता है, मेरे साथ अन्याय हुआ है।

खलीफा – उसे अंदर आने दो।

(हसन अंदर आता है।)

हसन – जहाँपनाह! इंसाफ कीजिए।

खलीफा – बोलो, क्या बात है ? किसने तुम्हारे साथ बेइंसाफी की है ?

हसन – हुजूर! मैं लकड़ी बेचने के लिए देहात से आया था। बाजार में जब मैं अली नाई की दुकान के पास से गुजरा तो उसने लकड़ी का सौदा किया । मैंने सारी लकड़ी पाँच शकाल में देना मंजूर कर लिया। पाँच शकाल में लकड़ियों के साथ उसने काठी भी उतार ली। मुझे मारा और दाम भी नहीं दिया।

खलीफा – उसने काठी क्यों उतार ली ?

हसन – हुजूर, वह कहने लगा कि काठी लकड़ी की बनी है, इसलिए मेरे सौदे में आती है।

खलीफा – तो काठी लकड़ी की बनी थी ?

हसन – जी हाँ, जहाँपनाह!

खलीफा – भाई, उसने तुम्हारे साथ धोखा तो किया लेकिन उसका कहना भी ठीक है। कानून के तहत उसके खिलाफ कुछ नहीं किया जा सकता। लेकिन तुम्हारे साथ बेइंसाफी तो हुई है। अच्छा, इधर आकर मेरी बात सुनो।

(हसन खलीफा के पास जाता है। खलीफा उसके कान में कुछ कहते हैं। हसन बाहर चला जाता है।)

तीसरा दृश्य

(अली अपनी दुकान में बैठा अपना उस्तरा तेज़ कर रहा है। हसन का दुकान में प्रवेश।)

अली – (पहचानकर) क्यों भाईजान, कैसे आए? पुरानी बात भूल जाइए। क्या आपको हजामत बनवानी है?

हसन – दोस्त अली! उस दिन तो गलती मेरी ही थी। मुझे उसका नतीजा मिल गया। मैं तो आज हजामत बनवाने आया हूँ। मेरा एक साथी और है। उसकी भी हजामत बनानी है।

अली – अरे भाई, आओ, आओ। हजामत बनाना तो मेरा पेशा ही है।

हसन – दोनों की हजामत बनाने की मजदूरी क्या होगी?

अली – दोनों की हजामत के लिए एक शकाल दे दीजिए।

हसन – ठीक है। पहले मेरी हजामत बना दीजिए।

(अली हसन के बाल काटता है। बाल काटकर)

अली – लीजिए, आपकी हजामत बन गई। अपने साथी को भी बुला लीजिए।

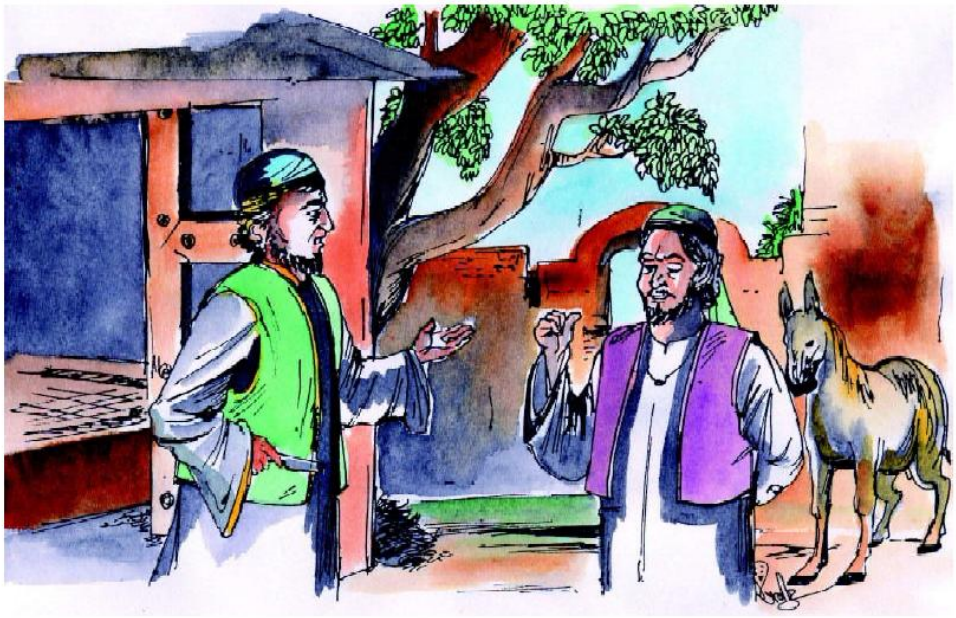

हसन – मैं अभी उसे लेकर आता हूँ।

(बाहर जाता है और गधे की रस्सी पकड़े हुए उसे अंदर ले आता है।)

हसन – लो भाईजान! मेरा साथी भी आ गया। इसकी हजामत भी बना दीजिए।

अली – अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा?

हसन – जी हाँ, यही तो मेरा साथी है। इसी के तो बाल कटवाने हैं।

अली – या अल्लाह! यह क्या कहता है? अरे बेवकूफ, क्या कभी गधे के भी बाल काटे जाते हैं? तूने फिर बेवकूफी की बात की। पहले मेरे हाथों मार खा चुका है। भाग यहाँ से नहीं तो हड्डी–पसली तोड़कर रख दूँगा।

हसन – भाईजान! इसमें मारने–पीटने की क्या बात है? सौदा तो सौदा ही होता है।

अली – अबे! कानून मत बघार। यहाँ से सीधे भाग जा, जल्दी कर।

हसन – अच्छा जाता तो हूँ, पर गरीब को सताना ठीक नहीं है।

(हसन गधे को लेकर चला जाता है।)

चौथा दृश्य

(स्थान– खलीफा का दरबार। खलीफा अपने सिंहासन पर बैठे हैं। हसन उनके सामने हाजिर होता है।)

खलीफा – क्यों भाई! क्या तुमने मेरे कहे मुताबिक काम किया?

हसन – जी हाँ, जहाँपनाह! आज अली नाई ने मेरे और मेरे साथी के बाल एक शकाल में काटना मंजूर किया था। उसने मेरे बाल तो काट दिए पर मेरे साथी के बाल नहीं काटे और मुझे और मेरे साथी को अपनी दुकान से बाहर निकाल दिया।

खलीफा – ठीक है। अब तुम्हारे साथ इंसाफ होगा। (एक सिपाही से) अली नाई को फौरन दरबार में हाजिर किया जाए। उससे अपने सारे औजार भी साथ लाने को कहा जाए।

(सिपाही जाता है। थोड़ी देर में वह अली नाई को अपने साथ लेकर आता है।)

अली – जहाँपनाह, मेरे लिए क्या हुक्म है ?

खलीफा – क्या तुम्हारा ही नाम अली नाई है ?

अली – जी हाँ, जहाँपनाह।

खलीफा – तुम्हारे खिलाफ यह आदमी आरोप लगा रहा है कि तुमने आज सुबह इसके तथा इसके साथी के बाल काटने का सौदा किया था, परन्तु बाद में तुम मुकर गए। क्या यह सच है ?

अली – सरकार, मैंने इसके बाल काट दिए, लेकिन यह अपने साथी के रूप में एक गधे को ले आया। आप ही सोचिए हुजूर, क्या कभी गधे की भी हजामत होती है ?

खलीफा – तुम ठीक कहते हो, गधे की हजामत कभी नहीं होती। पर क्या तुमने कभी यह भी सुना है कि गधे पर रखी काठी भी लकड़ियों में गिनी जाती है ? अगर यह ठीक है तो गधा भी आदमी का साथी हो सकता है और उसके भी बाल बनवाए जा सकते हैं। (अली चुप रहता है।)

खलीफा – अब अच्छा यही है कि इस गधे के सारे बाल इसी समय साफ कर डालो।

(अली मुँह लटकाए बाहर जाता है और गधे पर पहले साबुन मलता है और फिर उसके बाल काटता है। गधे की हजामत बनाने के बाद वह अंदर आता है।)

अली – हुजूर, मैंने आपके हुक्म का पालन कर दिया।

खलीफा – देखो अली, भला आदमी कभी गरीब को नहीं सताता। आइंदा के लिए मेरी बात गाँठ बाँध लेना। (अली नाई खलीफा को सलाम करके जाता है।)

खलीफा – (हसन से) हसन भाई, इधर आइए। अली ने आपके साथ जो बदसलूक किया, उसका नतीजा उसे मिल गया। तुम्हारी काठी का दाम तुम्हें मिल जाएगा। (खजांची से) खजांची, हसन को दस मोहरें दे दी जायँ। (हसन बहुत प्रसन्न होता है। वह मोहरें लेकर खलीफा को दुआ देता हुआ चला जाता है।)

शब्दार्थ

उस्तरा	–	नाई का छुरा	आरोप लगाना	–	दोष लगाना
इंसाफ	–	न्याय	मुंसिफ	–	न्यायाधीश
जहाँपनाह	–	बादशाह, सम्राट	बेइंसाफी	–	अन्याय
शकाल	–	एक सिक्का, जो बगदाद में चलता है, जैसे हमारे यहाँ रुपया चलता है।			

ठिठोली करना	–	मज़ाक करना, हँसी करना
राह लेना	–	अपने रास्ते चले जाना
मखौल उड़ाना	–	मज़ाक उड़ाना
आइंदा	–	भविष्य में, आगे कभी
बदसलूक	–	बुरा बर्ताव
हड्डी–पसली तोड़ना	–	बहुत पीटना
काठी	–	घोड़े या गधे पर रखी जाने वाली जीन
जहाँपनाह	–	संसार को आश्रय देने वाला (बादशाह के लिए संबोधन है)
दुआ देना	–	प्रार्थना करना, आशीर्वाद देना
दरबान	–	दरबार का सेवक
मुकर जाना	–	कही हुई बात से हट जाना

टिप्पणी :

जहाँपनाह – मुसलमान बादशाहों के लिए सम्बोधन, जिसका अर्थ होता है जगत् का आश्रयदाता।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा ?

प्रश्न 2 लकड़ी की काठी की बात पर खलीफा ने न्याय करने के बाद क्या कहा ?

प्रश्न 3 अली को अंत में गधे की हजामत क्यों बनानी पड़ी ?

प्रश्न 4 अली ने लकड़ियों के साथ ही काठी भी ले ली। तुम्हारी राय में अली का काम उचित था या अनुचित ? क्यों ?

प्रश्न 5 नीचे लिखे प्रश्नों के तीन–तीन उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर चुनकर लिखो।

क. अली के द्वारा लकड़ियों के साथ लकड़ी की काठी माँगना नियमानुसार–

(क) सही था (ख) गलत था (ग) पता नहीं

ख. अंत में अली को हसन के गधे की हज़ामत बनानी पड़ी?

(क) स्वयं की मर्जी से

(ख) हसन के कहने पर

(ग) खलीफा के कहने पर

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक नीचे दिए शब्द बोलें और बच्चों से श्रुतिलेख लिखवाएँ।

  जहाँपनाह, खलीफा, लकड़हारा, धोखेबाज, दुकान, बाज़ार, अल्लाह, खजांची।

- बच्चे ऊपर दिए शब्दों पर एक–एक वाक्य बनाकर बोलें।

प्रश्न 1 आदरसूचक शब्दों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित वाक्यों को फिर से लिखो।

जैसे– क्या तुमने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क्या आपने ही मुझे आवाज़ लगाई?

क. जो सौदा हुआ है, उसे तुम भी निभाओ।

ख. तुम खुद देख लो।

ग. अरे, क्या गधे के बाल कटवाएगा ?

घ. यह क्या कहता है ?

प्रश्न 2 'तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं न?' इस वाक्य को समझो और इसका अर्थ लिखो।

प्रश्न 3 इन शब्दों के हिन्दी में समान अर्थवाले शब्द लिखो :

मंजूर, हाजिर, खुद, गरीब, हुजूर, खिलाफ।

प्रश्न 4 क. 'हाथ कंगन को आरसी क्या' यह एक कहावत है। इसका अर्थ है, जो चीज हमारे सामने है उसे बताने के लिए प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं। यह कहावत इस पाठ में प्रयोग की गई है। इसका उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

ख. अपनी बोली की कोई एक कहावत अर्थ सहित लिखो और उसे उचित प्रसंग में अपने वाक्य में प्रयोग करो।

प्रश्न 5 इन वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो।

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. अब तुम दाम चुकाओ। (आदरसूचक वाक्य में)

ग. अली दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

घ. तुमने गधे पर रखी सारी लकड़ियाँ उतारकर रख दीं । (प्रश्नवाचक में)

प्रश्न 6 इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर लिखो :

लकडियाँ / लकड़ियाँ, विद्याथीयों / विद्यार्थियों, दृश्य / द्रश्य, ढेर / ढ़ेर, व्दार / द्वार, थोडी / थोड़ी, पाँच / पांच;

रचना

- तुम्हारे आसपास के लोग अपने झगड़े सुलझाने कहाँ जाते है? उसके बारे में लिखो।

गतिविधि

- अपने शिक्षक के मार्गदर्शन में इस एकांकी का मंचन करो।
- इस एकांकी का शीर्षक है 'इंसाफ'। क्या इसका कोई और भी शीर्षक हो सकता है ? सोचो और लिखो।

57SLEH

पुनरावृत्ति के प्रश्न

32KJ5H

नीचे दी गई कहानी को पढ़ो –

एक आदमी किसी गाँव में पहली बार आया था। गाँव में तीन रास्ते थे। उसने एक

लड़के से पूछा, "क्यों भाई, वकील साहब के घर को कौन–सा रास्ता जाता है?"

लड़के को मजाक सूझा उसने कहा, "इन तीनों में से कोई भी रास्ता नहीं जाता।"

"तो कौन–सा रास्ता जाता है?"

"कोई नहीं।"

"क्या कहते हो बेटे? वकील साहब इसी गाँव में रहते हैं न?"

"हाँ, रहते तो इसी गाँव में हैं।"

"तो कोई रास्ता तो उनके घर तक जाता होगा?"

आदमी ने हैरान होकर पूछा।

लड़के ने उत्तर दिया, "यह सड़क और रास्ते यहीं रहते हैं। ये कहीं नहीं जाते। ये बेचारे तो बोल ही नहीं सकते, लेकिन मैं आपको वह रास्ता बता सकता हूँ, जिस पर चलकर आप वकील साहब के घर तक पहुँच जाएँगे।

लड़के की बात सुनकर आदमी भी हँस दिया और बोला, "तुमने सही कहा बेटा, अगली बार मैं सोच–समझकर सवाल पूछूँगा।"

प्रश्न 1. नीचे दिए गए प्रश्नों के सही उत्तरों पर घेरा बनाओ –

1. आदमी को कहाँ जाना था?

क. लड़के के घर में

ख. वकील के घर में

ग. गाँव में

घ. रास्ते में

2. लड़के की बात सुनकर आदमी क्यों हँस दिया?

क. वह उलझ गया था।

ख. उसे अपने सवाल की कमी समझ में आ गई थी।

ग. उसे सही रास्ते का पता चल गया था।

घ. उसे लगा लड़का चुटकुला सुना रहा है।

3. दिए गए अनुच्छेद में प्रयुक्त इनमें से कौन–सा शब्द संज्ञा नहीं है?

क. वकील

ख. आदमी

ग. गाँव

घ. वह

4. आदमी ने हैरान होकर क्या पूछा?

क. वकील साहब के घर को कौन–सा रास्ता जाता है?

ख. वकील साहब इसी गाँव में रहते हैं न?

ग. कोई रास्ता तो उनके घर तक जाता होगा?

घ. तो कौन–सा रास्ता जाता है?

5. इस कहानी को पढ़कर पता चलता है कि –

क. वह आदमी मजाकिया था

ख. वह आदमी उस गाँव से अपरिचित था

ग. वह आदमी मूर्ख था

घ. वह आदमी लड़के को मूर्ख समझ रहा था

प्रश्न 2. चित्र को देखकर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर पर घेरा लगाओ –

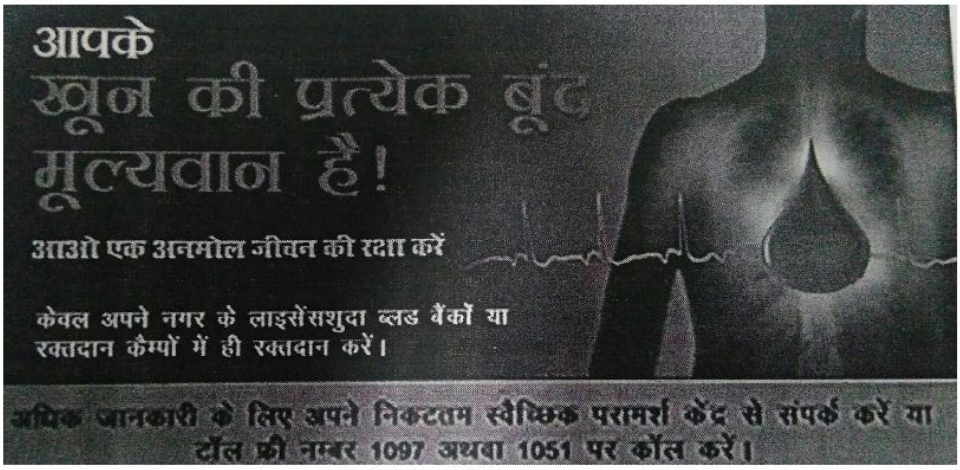

1. इस पंक्ति को पूरा कीजिए: आओ एक अनमोनल जीवन का .....।

2. इस विज्ञापन का उद्देश्य क्या है?

क. खून का महत्व बताना

ख. रक्तदान के लिए प्रेरित करना

ग. जीवन की रक्षा करना

घ. बैंकों का प्रचार करना

3. "आपके खून की प्रत्येक बूँद मूल्यवाद है" इस वाक्य में 'मूल्यवान' की जगह कौन–सा शब्द आ सकता है?

क. खून का महत्व बताना

ख. रक्तदान के लिए प्रेरित करना

ग. जीवन की रक्षा करना

घ. बैंकों का प्रचार करना

4. टॉल फ्री नंबर 1097 अथवा 1051 पर कॉल करने के लिए क्यों कहा जाता है?

क. रक्तदान के बारे में जानकारी ले सकेंगे

ख. फ्री में फोन कर सकेंगे।

ग. रक्तदान कर सकेंगे

घ. मुसीबत से अपने जीवन की रक्षा कर सकेंगे

5. रक्तदान का अर्थ क्या है?

क. खून माँगना

ख. खून देना

ग. रूपय का माँगना

घ. रूपयों का देना

प्रश्न 3. तुम कभी पिकनिक पर जरूर गए होगे। उसके बारे में लिखो।

प्रश्न 4. दीपावली की रात्रि में लागे दिये जलाकर अपने घरों में उजाला करते हैं। दियों के अलावा लोग और किन–किन चीजों से अपने घरों में रोशनी करते हैं?

प्रश्न 5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो–

क. किसी पक्षी के लिए पिंजरे का जीवन दुखदाई क्यों होता है ?

ख. वह कौन–सा थाल है जो मोतियों से भरा है?

ग. कवि ने किताबों के संसार को बड़ा क्यों बताया है?

घ. टेलीफोन के संबंध में अँग्रेजों ने जगदीश चंद्र बोस के प्रति क्या छल किया?

ङ. अली और हसन में झगड़ा किस बात पर उठा?

प्रश्न 6. नीचे लिखी पंक्तियों के अर्थ लिखो–

क. चार दिनों में ही वह मैना
अंदर तड़प रही थी।
उड़ने को अकाश में ऊँचे
तबीयत फड़क रही थी।

ख. किताबें कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं।

प्रश्न 7. कविता की उन पंक्तियों को लिखो–

क. जिनमें मैना ने अपनी जान के लिए खतरे बताए हैं।

ख. जिनमें किताबों के संसार को बड़ा और किताबों को ज्ञान का भंडार बताया गया है।

प्रश्न 8. तीन पुल्लिंग और तीन स्त्रीलिंग शब्द लिखो जिनके लिंग नहीं बदलते।

प्रश्न 9. नीचे लिखे शब्दों को खड़ी बोली हिन्दी रूप में लिखो।

पूत, ठाँव, थोरी, बसती।

प्रश्न 10. सही जोड़ियाँ मिलाओ–

किताबें	–	दुख
कोन्हों	–	ठौर
जमाना	–	कथा
ओखरे	–	क्षण
गम	–	पुस्तकें
ठउर	–	कोई
किस्सा	–	युग
छिन	–	उसका

प्रश्न 11. निम्नलिखित क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ–

हँसना, बोलना, चलना, कूदना, लिखना।

प्रश्न 12. नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो–

क. बाज आना।

ख. हैरान कर देना।

ग. सुन्न पड़ जाना।

घ. भनक लग जाना।

प्रश्न 13. नीचे लिखे वाक्यों को उनके सम्मुख दर्शाए वाक्यों में बदलो–

क. उतारो लकड़ी। (आदरसूचक वाक्य में)

ख. दुकान से उतरकर गधे के पास जाता है। (भूतकाल में)

ग. उसने काठी उतार ली। (प्रश्नवाचक वाक्य में)

घ. अली, हसन को लकड़ी से मारता है। (भविष्यत् काल में)

प्रश्न 14. अपने घर को साफ–सुथरा रखने के लिए तुम क्या–क्या करते/करती हो? दस वाक्यों में लिखो।

वासराः

रविवासरः

— रविवार

सोमवासरः — सोमवार

मङ्गलवासरः (भौमवासरः) — मङ्गलवार

बुधवासरः — बुधवार

गुरुवासरः (बृहस्पतिवासरः) — गुरूवार

शुक्रवासरः (भार्गववारः) — शुक्रवार

शनिवासरः (शनैश्चरवारः) — शनिवार

शरीरस्य अङ्गानि

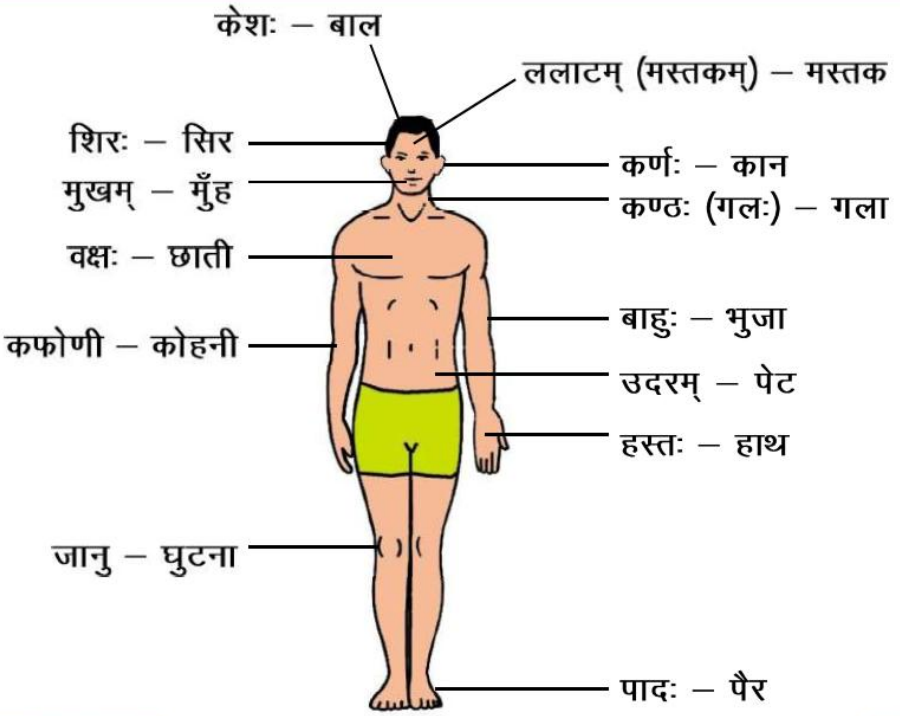

केशः – बाल
ललाटम् (मस्तकम्) – मस्तक
शिरः – सिर
मुखम् – मुँह
कर्णः – कान
कण्ठः (गलः) – गला
वक्षः – छाती
कफोणी – कोहनी
बाहुः – भुजा
उदरम् – पेट
हस्तः – हाथ
जानु – घुटना
पादः – पैर

ने

नासिका – नाक

ओष्ठः–ऊपर का ओठ
अधरः–नीचे का ओठ

जिह्वा – जीभ

दन्तः – दाँत

मुष्टिः – मुट्ठी
मणिबन्धः–कलाई

मध्यमा
अनामिका
तर्जनी
कनिष्ठा
अंगुष्ठ – अंगूठा
नखः – नाखून

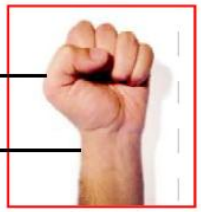

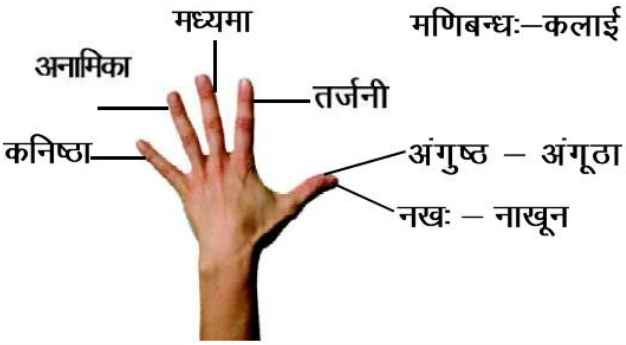

पशवः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
धेनुः (गौः)	–	गाय	
गजः (हस्ती)	–	हाथी	
वानरः (कपिः)	–	बन्दर	
मार्जारः (बिडालः)	–	बिलाव	
शुनकः (कुक्कुरः)	–	कुत्ता	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
अश्वः (घोटकः)	–	घोड़ा	
अजा (बर्करी)	–	बकरी	
सिंहः	–	सिंह	
गर्दभः	–	गधा	
उष्ट्रः	–	ऊँट	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
व्याघ्रः	–	बाघ	
मूषकः	–	चूहा	
भल्लूकः	–	भालू	
महिषः	–	भैंसा	
शृगालः (क्रोष्ठा)	–	सियार	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
हरिणः	–	हिरण	
वृषभः	–	बैल	
शशः (शशकः)	–	खरगोश	
नकुलः	–	नेवला	
कूर्मः	–	कछुआ	

गृहवस्तूनां नामानि

संस्कृत		हिंदी	चित्र
गृहम्	–	घर	
द्वारम्	–	द्वार	
वातायनम् (गवाक्षः)	–	खिड़की	
व्यजनम्	–	पंखा	
आसन्दः	–	कुर्सी	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सुखासन्दः	–	सोफा	
कटः	–	चटाई	
उत्पीठिका	–	टेबल	
साटिका	–	साड़ी	
करवस्त्रम्	–	रूमाल	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
पादकोशः	–	मोजा	
पादत्राणम्	–	चप्पल	
धौतवस्त्रम्	–	धोती	
पर्यङ्कः	–	पलङ्ग	
कर्तरी	–	कैंची	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
विद्युद्दीपः	–	बिजली का बल्ब	
स्यूतः	–	थैला	
घटीयन्त्रम्	–	घड़ी	
पुस्तकम्	–	पुस्तक	
लेखनी (कलमः)	–	कलम	

समयाः

संस्कृत		हिंदी	चित्र
एकवादनम्	–	एक बजे	
द्विवादनम्	–	दो बजे	
त्रिवादनम्	–	तीन बजे	
चतुर्वादनम्	–	चार बजे	
पञ्चवादनम्	–	पांच बजे	
षड्वादनम्	–	छः बजे	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
सप्तवादनम्	–	सात बजे	
अष्टवादनम्	–	आठ बजे	
नववादनम्	–	नौ बजे	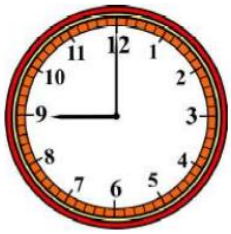
दशवादनम्	–	दस बजे	
एकादशवादनम्	–	ग्यारह बजे	

संस्कृत		हिंदी	चित्र
द्वादशवादनम्	–	बारह बजे	
सार्धसप्तवादनम्	–	साढ़े सात बजे (7.30)	
सपादपञ्चवादनम्	–	सवा पाँच बजे (5.15)	
पादोननववादनम्	–	पौने नौ बजे (8.45)	

विशेष:–

1) पाद का अर्थ 1/4 भाग होता है
2) स = सहित और 'उन' का अर्थ होता है कम।
3) पांच बजे में सपाद अर्थात 1/4 भाग सहित/अधिक है।
4) नव बजे में उन अर्थात कम, पादोन में 1/4 भाग कम है।